ओ३म्

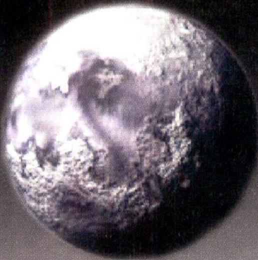

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

जुलाई-२०१७

जुलाई-२०१७ ◆ वर्ष ६ ◆ अंक ०२ ◆ उदयपुर

हिमगिरी के उत्तुंग शिखर पर,
सीना तान खड़ा है।
कष्टों की परवाह नहीं है,
राष्ट्रप्रेम का भाव भरा है।
मानव के मानस में हरदम,
राष्ट्र ही सर्वप्रथम हो।
सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो स्वराज्य का,
दृढ़ निश्चय स्थापित हो।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ६७

क्या खुशबू, क्या स्वाद,
एम डी एच मसाले हैं खास
94 साल के महाशय जी जिन्हें अब 82 सालों का तजुर्बा है। इन्होंने 12 वर्ष की उम्र में ही काम करना शुरू कर दिया था। ऐसा लगता है कि इनका जन्म मसालों में ही हुआ है और मसाले ही इनका जीवन है। महाशय जी की ईमानदारी, मेहनत, लगन और मसालों का तजुर्बा ही एम.डी.एच. मसालों को सर्वश्रेष्ठ बनाता है।
खाइये और खिलाइये मज़ेदार स्वाद का आनन्द उठाइये
MDH
मसाले
असली मसाले
सच–सच
Garam masala
Rajmah masala
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
MAKES DISHES COLOURFUL AND DELICIOUS
Sabzi masala
Shahi Paneer masala
Dal Makhani masala
Chana masala
(CHHOLE KA MASALA)
Pav Bhaji masala
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015, 011-41425106-07-08 www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८ IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११८
पौष शुक्ल नवमी
विक्रम संवत्
२०७४
दयानन्दाब्द
१९३

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

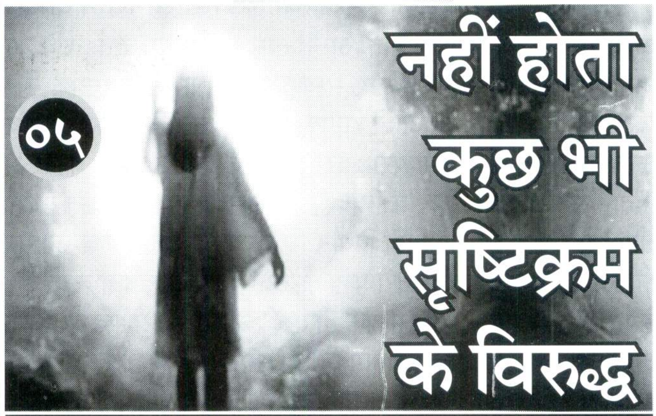

July - 2017

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन
३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार २६

हलचल २७

०४ वेद सुधा
०७ बलात्कार-मुक्त हो समाज
०९ गोमाता विश्व की पूजनीय क्यों है?
१२ व्यंग्य- बेचारा आलू
१८ लोपामुद्रा
२१ सर्वोपरि सत्ता
२३ योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं ....
२५ सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०७/१७
२८ स्वास्थ्य- पक्षाघात (स्ट्रोक)
२९ कथा सरित- जनसेवा सर्वोपरि
३० सत्यार्थ पीयूष-उपयुक्त दण्ड व्यवस्था

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ६ अंक - ०२

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

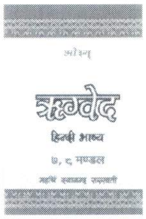

वेद सुधा

ओ३म् त्वमित्सप्रथा अस्यग्ने त्रातर्ऋतः कविः।
त्वां विप्रासः समिधान दीदिव आ विवासन्ति वेधसः।। - साम. ४२

अन्वयः- **समिधन दीदिवः त्रातः अग्ने! त्वम् इत् सप्रथाः ऋतः कविः असि। त्वां वेधसः विप्रासः आविवासन्ति।**

अन्वयार्थः- (समिधान! हे स्वयं सम्यक् दीप्त तथा अपने सम्पर्क में आने वालों को प्रदीप्त करने वाले! (दीदिवः) हे स्वयं सब प्रकार से प्रकाशमान एवं अपने सम्पर्क में आने वालों को प्रकाशमान करने वाले! (त्रातः अग्ने) हे सब का त्राण-रक्षण-संरक्षण करने वाले सब के अग्रणी परमेश्वर! (त्वम् इत् सप्रथाः ऋतः कविः असि) तू ही सर्वत्र विस्तृत, सर्वत्र व्याप्त, सर्वत्र सुप्रसिद्ध, ऋतः- सत्यस्वरूप, कविः- क्रान्तिदर्शी-ज्ञानी सर्वज्ञ है, (त्वाम् इत् वेधसः आविवासन्ति) तुझ परमपिता परमेश्वर को ही ये वेधस लोग- ये मेधावी लोग ये विधि विधान के अनुकूल चलने वाले उपासक जन संसार के ही नहीं वरन् तेरे भी प्रिय बने हुए-हुए ही तेरी परिचर्या करते हैं- तेरी पूजा करते हैं- तेरी आराधना करते हैं।

हे प्रभो! तू 'समिधान' है, सम्यक दीप्त ही नहीं वरन् प्रदीप्त है। अर्थात् तू अपने दिव्य तेज से जाज्वल्यमान है। इसलिए हे अपने प्रदीप्त तेज से तेजोमय भगवन्! तेरे समीप जो आता है, तेरा आश्रय जो लेता है, वह भी फिर तेरे प्रदीप्त तेज से तेजोमय हो जाता है, तेरे ओज से ओजोमय हो जाता है। हे परमेश्वर! तू 'दीदिवः' अपनी अनुपम ज्ञान ज्योति से ज्योतिर्मय है, तू अपने उत्तम ज्ञानप्रकाश से प्रकाशमय है। अतः हे ज्ञानज्योति से ज्योतिर्मय प्रभो! तेरी शरण में जो आ जाता है तेरे चरणों में जो बैठ जाता है, तू उसको अपनी ज्ञान-ज्योति से ज्योतिर्मय कर देता है, तू उसे भी अपने ज्ञान-प्रकाश से प्रकाशमय कर देता है।

हे ईश्वर! तू 'त्राता' है, सदा सब की पाप-ताप से त्राण-रक्षा करने वाला है, सदा सबको आधि-व्याधि से बचाने वाला है। प्रथम

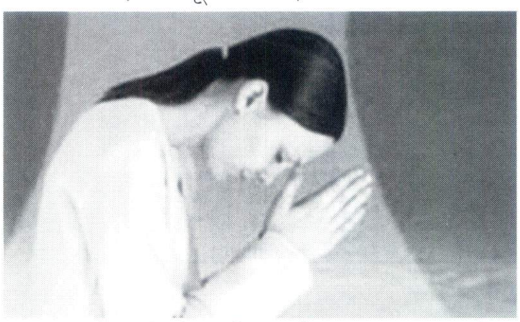

तो तू अपने वेदोपदेश द्वारा व हृदय में होने वाली प्रेरणाओं के द्वारा सबका मार्गदर्शन कर सबको दुर्गुण-दुर्व्यसनों से बचाता रहता है ताकि सब इन दुर्गुण, दुर्व्यसनों के परिणामस्वरूप होने वाले कष्ट-क्लेशों को भोगने से बच सकें। हे ऐसे 'त्रातः'! रक्षक प्रभुवर! तू यह सब उपदेश वा प्रेरणा आदि इसीलिए दे पाता है कि तू अग्नि है, ज्ञान से युक्त है, तेज से युक्त है, प्रकाश से युक्त है, सब का नेता है, सबका अगुआ है, सब का हितचिन्तक है। इस कारण से ही तो तू सबको उत्तमोत्तम प्रेरणा दे पाता है, सबको उत्तमोत्तम रूप से सन्मार्ग की ओर सदा ले जा पाता है। ऐसे हे सम्यक् प्रदीप्त, ज्योतिर्मय, सर्वरक्षक, ज्ञान-प्रकाश के अद्वितीय स्रोत प्यारे प्रभुवर! इतना ही नहीं तू तो 'सप्रथाः' सब दृष्टि से बढ़ा हुआ सुसमृद्ध हुआ-हुआ भी तू ऋतः- सत्यस्वरूप है, तू ज्ञानस्वरूप है, तू यज्ञस्वरूप है। इतना ही नहीं तू तो 'कवि' भी है, वेद जैसे अनुपम काव्य का करने वाला अद्वितीय ज्ञानी भी तू ही है। तू सर्वज्ञ भी है, तू क्रान्तदर्शी भी है, तू दूरदर्शी भी है, तू सूक्ष्मदर्शी भी है, तू भीतर-बाहर से सब को (कौति शब्दयति-उपदिशति-इति कविः) सदुपदेश देता हुआ भी सब तरह से सबका मार्ग प्रशस्त करता रहता है।

हे परमात्मन्! तेरे विलक्षण गुण, कर्म, स्वभावों को देख देखकर ही तो जो 'वेधस' होते हैं, जो सदा तेरे बनाये हुए विधि-विधानों के अनुसार ही अपना जीवन व्यतीत करते रहते हैं, जो मेधावी होते हैं जो बुद्धिमान् होते हैं, जो समझदार होते हैं, जो सदा सजग रहते हैं, जो सदा सावधान रहते हैं, वे सदा तुझको अपने जीवन का अन्तिम उद्देश्य मानकर सदा तेरा ही आश्रय लेते हैं, सदा तेरी ही परिचर्या करते हैं, सदा तेरी ही पूजा करते हैं, सदा तेरी ही आराधना करते हैं, सदा तेरा ही गुणगान करते हैं, यह सब कुछ ऐसे करते हुए तेरी कृपा से वे भी तेरे तेज से तेरी तरह शनैः-शनैः सम्यक् प्रदीप्त हो जाते हैं, वे भी तेरी ज्ञान-ज्योति से तेरी तरह जगमगाने लगते हैं, वे भी तब तेरी तरह अन्यों के त्राता-रक्षक बन जाते हैं, तेरी तरह सबके अग्रणी बन जाते हैं, तेरी तरह सर्व हितकारी बन जाते हैं, तब तेरी तरह उनके हाथों से भी सबका हित होने लगता है, उनके कर कमलों से भी सबका भला होने लगता है। नाथ! यह सब कुछ देख, सुन वा जान कर ही तो हम तेरी ओर अबाध गति से भागे चले आ रहे हैं, तेरे आश्रय में ही पूर्ण विश्राम, पाने आ रहे हैं। प्रभुवर! तू हमारी उत्कण्ठा को निहार कर हम पर भी कृपा कर, हम पर भी अनुकम्पा कर और अपने अद्वितीय स्नेह भरे आश्रय में हमें सब प्रकार से कृतार्थ कर।

लेखक- आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार
साभार- वैदिक प्रार्थना-सौरभ

❑❑❑

सृष्टिक्रम के विरुद्ध कभी कुछ नहीं होता यह अटल सिद्धांत है। परन्तु इलैक्ट्रोनिक तथा प्रिंट मीडिया में आये दिन इस प्रकार के समाचार आते रहते हैं जिनसे बुद्धि चकरा जाती है। जड़ वस्तु खा पी नहीं सकती, चैतन्य की भाँति व्यवहार नहीं कर सकती, चमत्कार नहीं दिखा सकती, परन्तु आपको ज्ञात है कि गणेश जी द्वारा दूध पीने के समाचार, नौरंगाबाद में हनुमान जी की मूर्ति के रोने के समाचार, मेहसाना में चरण पादुकाओं के स्वतः चल पड़ने के समाचारों को सुन भारतीय जन किस प्रकार घटना स्थल की ओर दौड़ पड़े थे। जब जब भी इस प्रकार की घटनाओं का विश्लेषण किया जाता है इनका झूठा होना अथवा इनके पीछे कोई चातुर्यपूर्ण कार्यवाही का होना पाया जाता है। यदा कदा इनकी पोल भी खुलती रहती है, जैसे साईं बाबा के चमत्कार। इण्डियन रेशनेलिस्ट एसोशियेशन के सनल ने राष्ट्रीय समाचार चैनल पर एक शो के दौरान साबित कर दिया कि यह और कुछ नहीं हाथ की सफाई तथा ठीक वैसी ही ट्रिक हैं जो आम तौर पर जादूगर दिखाते हैं। अंतर यह है कि जादूगर ईमानदारी से साफ साफ कह देता है कि यह सब ट्रिक तथा हाथ का चमत्कार है परन्तु तथाकथित गुरु लोग ऐसे प्रयोगों को अपने को दैवीय शक्तियों से युक्त साबित करने हेतु दिखाते हैं।

सत्यार्थ प्रकाश के ११ वें समुल्लास में महर्षि दयानन्द ने कुछ ऐसे ही चमत्कारों के पीछे छिपी चतुराई का वर्णन किया है। जैसे किसी चालाक व्यक्ति द्वारा कोई मूर्ति आदि किसी जगह पहले से ही मिट्टी में दबा देना, पुनः किसी संपन्न व्यक्ति पर प्रभाव डालने हेतु उसे कहना कि रात्रि को स्वप्न आया है कि अमुक जगह फलां देवता कि मूर्ति है। जब वह सम्पन व्यक्ति को लेकर वहाँ पहुँचता है तो वास्तव में मूर्ति मिलती है। संपन्न व्यक्ति प्रभावित हो उस चालाक को ही वहाँ का पुजारी बना देता है। इसी प्रकार जगन्नाथ मंदिर के हंडों के चावलों के चमत्कार तथा अन्य चमत्कारों की पोल खोली है कि किस प्रकार नीचे के हंडों में कच्चे चावल तथा ऊपर के हंडों में पके चावल संभव हैं। इसी प्रकार से कालियाकांत की मूर्ति के हुक्का पीने के पीछे क्या

नहीं होता कुछ भी सृष्टिक्रम के विरुद्ध

कहानी है तथा रामेश्वर में गंगोत्तरी के जल चढ़ाते समय लिंग बढ़ता क्यों प्रतीत होता है सबके पीछे चतुराई और झूठ को सत्य के रूप में प्रचारित करने वाली मार्केटिंग योजना कार्य करती है। (पढ़ें सत्यार्थ प्रकाश-११ समुल्लास)

आजकल सोशल मीडिया के प्रचार के बाद तो जैसे सारी मर्यादाएँ विनष्ट हो गयीं हैं। कोई अपनी जिम्मेदारी नहीं समझता और बिना पड़ताल किये भ्रामक समाचार को अग्रेसित कर देता है। ऐसे अनेक वीडिओ घूमते रहते हैं जिनमें सृष्टिक्रम से विरुद्ध घटना दर्शायी गयी हुयी होती हैं। कुछ चैनल्स जैसे ए.वी.पी न्यूज ने इनकी पड़ताल करने की जिम्मेदारी उठायी है। वे साधुवाद के पात्र हैं। समाज के बौद्धिक ह्रास को रोकने हेतु जो भी प्रयत्नशील हैं वे स्तुत्य ही हैं।

अभी हाल में एक वीडियो चर्चित रहा जिसे मुम्बई के जे.जे. अस्पताल का बताया गया। कुछ लोग इसे अन्य अस्पताल का बता रहे थे। जब इसकी जाँच की गयी तो झूठा पाया गया। जब किसी वीडियो की जाँच की जाय तो सर्वप्रथम उस लोकेशन को ढूँढ़ना महत्वपूर्ण है। यह कठिन कार्य है परन्तु साधन और उद्देश्य के प्रति दृढ़ता हो तो मुश्किल भी नहीं। लोकेशन से होता यह है कि आप वीडियो में दर्शायी जगह से मिलान कर सकते हैं और अगर वे नहीं मिलती हैं तो वह वीडियो प्रथम दृष्टया झूठा समझा जा सकता है। ए.वी.पी न्यूज चेनल वालों ने यही किया। उनके प्रतिनिधि जे.जे.अस्पताल और अन्य दो अस्पतालों में गए। पर उन्हें कहीं भी वीडियो में दर्शायी गयी पृष्ठभूमि नहीं मिली। अब हम पाठकों को बताना चाहेंगे कि उस वीडियो में था क्या? वीडियो में रात का समय दिखाया था। एक गलियारे में एक स्ट्रेचर रखा हुआ था। एक व्यक्ति पानी भरने आता है। जब वह पानी भरकर जाने लगता है तो अचानक स्ट्रेचर आगे पीछे अपने आप चलने लगता है और व्यक्ति डरकर भाग जाता है। साफ साफ एक भुतहा दृश्य को दिखाने का प्रयत्न किया था। भूतों के अस्तित्व में जो विश्वास रखते हैं उनकी तो बात ही क्या,

जो भूतों के न होने के प्रति दृढ़ विश्वास रखते हैं केवल उन्हें छोड़कर अन्य बीच की असमंजस की स्थिति वाले लोग भी वीडियो की सत्यता पर विश्वास करेंगे यह इस प्रकार फिल्माया गया है। चैनल के प्रतिनिधि द्वारा अधिक गहरायी से छानबीन करने पर पता चला कि यह अर्जेन्टाइना में फिल्माया गया वीडियो है जिसे दो लोगों ने अपने संपर्क के एक व्यक्ति को डराने के लिए बनाया था। रात के समय न दिखने वाली रस्सी का प्रयोग कर बनाया था और उनकी इस हरकत के कारण उन दोनों व्यक्तियों को दंड भी दिया जा चुका था।

इससे मिलता जुलता एक वीडियो हमने भी कुछ वर्ष पूर्व देखा था। दावा किया गया था कि दिल्ली की एक कोर्ट का है। पूर्वी दिल्ली में करकरदूमा कोर्ट। उसमें प्रेक्टिस करने वाले वकीलों का मानना है कि उसमें भूत रहते हैं तथा उनकी गतिविधि सीसीटीवी कैमरे में भी कैद होती है जिसमें कम्प्यूटर का रात्रि में अपने आप चालू हो जाना, बुलबुले जैसे शून्य में पैदा हो जाना आदि हैं। तथाकथित वीडियो में रात्रि के समय का दृश्य था। जनशून्य कारीडोर तथा कमरे थे। सीसीटीवी में दिख रहा था कि फाइलें इधर से उधर फैंकी जा रहीं थीं परन्तु कोई व्यक्ति नहीं था। हम चाह कर भी साधनों की कमी से कोई जाँच पड़ताल नहीं कर सके थे। पर समाचार पत्रों के अनुसार कुछ पेरानार्मल एक्टिविटी परीक्षकों के अनुसार कम्प्यूटर पूर्व में इंस्टाल्ड साफ्टवेयर के कारण 'ऑन' हो जाते थे तथा बबल्स का कारण किसी तरह की एलेक्ट्रोमेग्नेटिक एनर्जी थी।

एवीपी पर ही एक और वीडियो का विश्लेषण था। पटना के एक अस्पताल पारस हास्पिटल के सीसीटीवी में कैद दृश्य बताया जा रहा था। दृश्य था कि हॉस्पीटलनुमा गलियारे में पलंग पर कोई लेटा है। अचानक उसमें से आत्मा जैसी कोई चीज निकलती दिखायी देती है कुछ धुँआ सा भी। अस्पताल वालों ने अपने सीसीटीवी में ऐसी किसी रिकार्डिंग से साफ इनकार कर दिया। वस्तुतः सोशल मीडिया का आज जितना उपयोग बढ़ता जा रहा है, सनसनी फैलाने के उद्देश्य से अथवा अंधविश्वास को बढ़ावा देने के लिए इस प्रकार के वीडियो प्रसारित कर दिए जाते हैं यही कारण है कि आजकल व्हाट्सएप आदि की यह स्थिति हो गयी है कि उसकी न्यूज पर कोई विश्वास नहीं करना चाहता। परन्तु इस प्रकार के अंधविश्वास के समाचारों पर लोग ज्यादा विश्वास कर लेते हैं।

> **"एन्ड्रायड मोबाइल फोन के गूगल प्ले स्टोर द्वारा आप** Ghost Creator **जैसे एप डाउनलोड कर सकते हैं। जिसकी सहायता से आप किसी भी पिक्चर में 'भूत'** Create **कर सकते हैं।** It's so simple"

जालन्धर में एक ऐसे बच्चे ने जन्म लिया जिसकी शक्ल प्रचलित भगवान् गणेश से मिलती जुलती है, लोग उस बच्चे को भगवान गणेश का पुनर्जन्म बता रहे है.. यही नहीं जिस स्कूल में वो बच्चा पढ़ता है वहाँ के टीचर भी उस बच्चे को भगवान गणेश का रूप मानते हैं। पंजाब में मजदूरी करने वाले कमलेश का ५ साल का बेटा है प्रांशु जिसे लोग भगवान गणेश मानते हैं। दूर दराज गाँव से लोग इस बच्चे का आशीर्वाद लेने उसके पास पहुँचते हैं यही नहीं इस बच्चे को उसके घर वाले पूरा भगवान के रूप में तैयार भी कर देते हैं और वो बच्चा अपने स्कूल की पढ़ाई समाप्त करके जब घर आता है तो फिर वो लोगों को आशीर्वाद देने में लग जाता है। लोगों की इस मन:स्थिति को आप क्या कहेंगे?

लोगों की बेबकूफी की इंतहा देखिये। हमें एक पुराना समाचार स्मृत हो आया। २०१४ सितम्बर में इंदौर शहर के लूनियापुरा क्षेत्र में अशोक सोनकर के घर एक सुअर ने रविवार सुबह एक साथ नौ बच्चों को जन्म दिया। इनमें आठ बच्चे तो सामान्य थे, लेकिन नौवें बच्चे के सिर पर सूंड थी। अजीबो-गरीब शक्ल में जन्मे सुअर के बच्चे को लोगों ने गणेश का रूप मानकर महज कुछ ही घंटों में हजारों रुपए का चढ़ावा चढ़ा दिया। अस्पताल ले जाते समय रास्ते में ही दम तोड़ चुके इस सुअर के बच्चे को देखने सुबह से ही हजारों की तादाद में लोग आने लगे थे। भीड़ इतनी ज्यादा थी कि इसे संभालने के लिए पुलिस को बुलाना पड़ा। सुअर पालक अशोक सोनकर बताते हैं कि यह सुअर अन्य सुअरों की अपेक्षा अद्भुत था, इसलिए लोगों ने हजारों का चढ़ावा चढ़ाया है। इसी चढ़ावे से पीपल के झाड़ के नीचे इस सुअर की समाधि बनाई जाएगी।

मानव को प्रभु की सबसे बड़ी देन है विवेक। उसका प्रयोग ही कर्त्तव्य है। लोगों का कर्त्तव्य होना चाहिए कि तर्कपूर्ण वातावरण सृजित करने हेतु पूर्ण प्रयत्न करें ताकि जिससे समाज इस प्रकार की अंधविश्वास से परिपूर्ण मानसिकता से बाहर निकल सके।

- **अशोक आर्य**

चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

❑❑❑

बलात्कार-मुक्त समाज के लिए लें संकल्प

बात कोई बीस-बाइस साल पुरानी होगी। लंच टाइम में कुछ लोग भोजन कर रहे थे तो कुछ चाय की चुस्कियाँ ले रहे थे और कुछ अखबार पढ़ रहे थे। एक साहब ज़ोर-ज़ोर से समाचार पढ़-पढ़कर भी सुना रहे थे। उन्होंने एक समाचार पढ़कर सुनाया कि कुछ लोगों ने एक महिला के साथ छीना-झपटी और बलात्कार किया। समाचार सुनाने के बाद उसने दाँत फाड़ दिए। ''ये औरतें होती किसलिए हैं? छीना-झपटी और मज़े लेने के लिए ही तो होती हैं'', ये कह कर एक अन्य व्यक्तित्वहीन श्रोता ने अपनी टिप्पणी दी और बेहयाई से उसने भी दाँत फाड़ दिए।

मैं उबल पड़ा और प्रतिवाद किया लेकिन उनकी बेहयाई जारी रही। मैंने कहा कि यदि उस महिला की जगह तुम्हारी बहन या पत्नी होती तो क्या फिर भी इसी तरह दाँत फाड़ते?''हमारी बहन क्यों होती तेरी बहन नहीं होती'', एक ने निर्लज्जतापूर्वक उत्तर दिया। बात इतनी बढ़ गई कि नौबत हाथापाई तक जा पहुँची। दस-बारह लोग थे। सभी लोग शिक्षित थे जिनमें से ज़्यादातर एमए बीएड अथवा बीए बीएड थे। और हम सभी जिस अत्यंत सम्मानित पेशे से संबंधित थे आप अवश्य ही समझ गए होंगे। कुछ तटस्थ थे और बाक़ी सभी ने मुझे दोषी ठहराया।

वो सब एक हो गए थे और एक सज्जन ने मुझे धमकी भरे अंदाज़ में कहा कि हम सब तेरा सामाजिक बहिष्कार कर देंगे। मैंने कहा कि तुम क्या मेरा सामाजिक बहिष्कार करोगे मैं ही तुम सब का सामाजिक बहिष्कार करता हूँ। और सचमुच लंबे समय तक सामाजिक बहिष्कार का ये सिलसिला चला बाद में सब कुछ सामान्य सा हो गया, लेकिन उनकी मानसिकता को न तो मैंने उस समय सही माना और न आज ही मानता हूँ।

१६ दिसंबर २०१२ की हृदयविदारक सामूहिक बलात्कार की झकझोर कर रख देने वाली घटना आप भूले नहीं होंगे। इस घटना के बाद मेरे पास कई प्रबुद्ध मित्रों के फोन आए कि मैं इस घटना पर अवश्य ही अपने विचार प्रकाशित करवाऊँ। जब भी मैं १६ दिसंबर २०१२ की घटना के बारे में सोचता तो उपरोक्त वही बीस-बाइस साल पुरानी घटना मेरी आँखों के सामने आ जाती। क्या हमारी ऐसी ही मानसिकता और उत्तरदायित्व के अभाव का परिणाम नहीं हैं आज आम हो चुकी बलात्कार की घटनाएँ?

हमने क्रूरता की शिकार नवयुवती को बहादुर लड़की का खिताब दिया। उसकी मृत्यु को शहादत का दर्जा दे दिया। न केवल एक बेबस, लाचार युवती की अस्मिता को कुचला गया, अपितु उसके शरीर को भी रौंदा और कुचला गया था जिससे उसकी मौत तक हो गई लेकिन इसमें शहादत कैसी? एक पीड़िता व मृतका के लिए नए-नए विशेषण गढ़ कर अथवा पुरस्कार स्थापित करके हम आख़िर सिद्ध क्या करना चाहते हैं? एक मज़्लूम अथवा नृशंसता की शिकार युवती की मौत को महामंडित कर कहीं हम अपनी चरित्रहीनता, कर्तव्यहीनता, अयोग्यता अथवा विकृत मनोग्रंथियों को छुपाने का प्रयास तो नहीं कर रहे हैं?

इंडिया गेट पर जाकर मोमबत्तियाँ जलाना सरल है। हालांकि उक्त प्रकार से गलत का विरोध करना अथवा न्याय की मांग करना बुरा नहीं लेकिन उससे अच्छा है जहाँ भी ग़लत बात दिखलाई पड़े उसका विरोध किया जाए चाहे उसमें हमें परेशानी ही क्यों न उठानी पड़े। ऐसी घटनाओं के लिए वास्तव में हम सब दोषी हैं। सरकार और प्रशासन ही नहीं दोषी है पूरा समाज। दोषी है हर शख़्स। माना कि यह कुछ लोगों का वहशीपन है लेकिन हमारी नैतिकता को क्या हुआ? हमारी सतर्कता को क्या हुआ? हम सबकी कुछ जिम्मेदारियाँ होती हैं उनका क्या हुआ?

एक बात और वो ये कि जब हमारे अपने नज़दीकी लोग कोई ग़लत कार्य करते हैं तो हम न केवल तटस्थ बने रहते हैं अपितु उन्हें बचाने की कोशिश में जी-जान से लग जाते हैं। क्या व्यभिचार अथवा उत्पीड़न में लिप्त अपने किसी रिश्तेदार अथवा मित्र का हमने कभी विरोध या बहिष्कार किया? क्या अपने बच्चों विशेष रूप से बेटों के ग़लत आचरण को लेकर उनकी भर्त्सना की, उन्हें सुधारने के लिए कभी भूखे-प्यासे रह कर सत्याग्रह किया? किया तो अच्छा है क्योंकि इसी के अभाव में पनपते हैं सारे विकार।

इंदौर की महारानी अहिल्याबाई होल्कर अत्यंत न्यायप्रिय व प्रजावत्सल शासक हुई हैं। युवावस्था में ही पति की मृत्यु हो गई थी। उनका एक मात्र पुत्र था भालेराव होल्कर। वह

अत्यंत उद्दण्ड हो चला था। युवा लड़कियों के साथ छेड़छाड़ और जबरदस्ती करना उसके लिए सामान्य सी बात हो गई थी। अहिल्याबाई को जब अपने पुत्र की इन करतूतों का पता चला तो उसने उसे सार्वजनिक रूप से हाथियों के पैरों तले पटकवा दिया जिससे हाथी उसे कुचल सकें और उससे सबक़ लेकर कोई भी पुरुष किसी महिला से अभद्रता दिखाने का साहस न कर सके। अपनों की ग़लती पर सज़ा देना तो दूर हम अपने विकृत मनोभावों से छुटकारा पाने तक का प्रयास नहीं करते।

वहशीपन अनैतिकता व अपराध है लेकिन तटस्थता भी कम अनैतिक व अपराध नहीं। ये कुछ लोगों का वहशीपन हो या हमारी तटस्थता अथवा सरकार व प्रशासन की लापरवाही, इन सबके पीछे भी कुछ कारण हैं और वो हैं सही शिक्षा, संस्कार व नैतिक मूल्यों का अभाव। तटस्थता व नैतिक मूल्यों के अभाव में इस समस्या का समाधान सरल नहीं। आज हम किसी को सार्वजनिक रूप से हाथियों के पैरों तले तो नहीं कुचल सकते लेकिन अपराधियों को कठोर दंड तो दिया जा रहा है। अपराधियों को मृत्युदंड के बावजूद ये सिलसिला थम नहीं रहा है तो इसका यही कारण है कि अपराध के बीज हमारी सोच में हैं। उस विकृत सोच को कुचलना अथवा मानसिकता को बदलना ज़रूरी है।

यदि हम स्वयं अपनी और दूसरों की मानसिकता बदलना चाहते हैं और वहशीपन से समाज को छुटकारा दिलाना चाहते हैं तो आज ही और सदैव ही यही संकल्प कीजिए और करवाइए :

१. मैं न केवल स्वयं किसी पर अत्याचार नहीं करता अपितु दूसरों द्वारा किए गए अत्याचार को भी नज़रअंदाज़ नहीं करता।

२. मैं जहाँ भी अत्याचार होते देखता हूँ अपनी आवाज़ उठाता हूँ।

३. शोषण व उत्पीड़न के विरुद्ध मैं तत्क्षण आवाज़ उठाता हूँ।

४. शोषण, अत्याचार व उत्पीड़न के विरुद्ध मैं तटस्थ होकर शोषक, अत्याचारी व उत्पीड़क के विरुद्ध आवाज़ उठाता हूँ।

- सीताराम गुप्ता
ए. डी.-१०६-सी, पीतमपुरा,
दिल्ली-११००३४
चलभाष- ०९५५५६२२३२३
Email: srgupta54@yahoo.co.in

❑❑❑

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
''सत्यार्थ सौरभ'' के सदस्य बनें

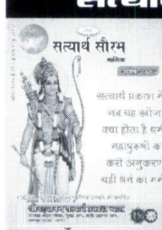

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण पृष्ठ २० पर देखें।

गोमाता विश्व की पूजनीय क्यों है?

मनमोहन कुमार आर्य

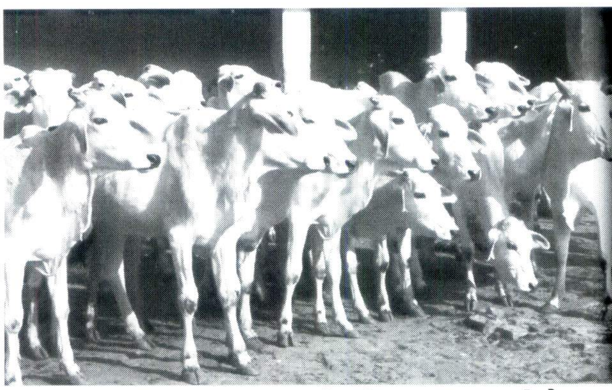

संसार में जड़ व चेतन दो प्रकार के पदार्थ हैं। चेतन पदार्थ भी दो व दो प्रकार के हैं। प्रथम ईश्वर जिसने इस सृष्टि को रचा है और दूसरे चेतन पदार्थ जीवात्मायें हैं जो सूक्ष्म, अनादि, अविनाशी, अमर, नित्य, एकदेशी, अणुमात्र, ज्ञान व कर्म की सामर्थ्य से युक्त, ससीम व अल्पज्ञ हैं। ज्ञान व गति यह दो मुख्य स्वाभाविक गुण जीवात्मा के हैं। संसार में जीवात्माओं की संख्यायें अनन्त हैं। ईश्वर की दृष्टि में जीवात्माओं की संख्या उसको ज्ञात होने से सीमित कह सकते हैं। जीवात्मा का स्वरूप जन्म व मरणधर्मा है। जीवात्मा को जन्म इसके पूर्व जन्मों के कर्मानुसार ईश्वरीय व्यवस्था से मिलता है। जब किसी जीवात्मा की मनुष्य योनि में मृत्यु होती है तो उसे अपने कर्मों के सुख व दुःखी रूपी फलों को भोगना होता है। परमात्मा उनके कर्मानुसार उसे मनुष्य व इतर पशु आदि योनियों में जन्म देता है जिससे वह अपने किये हुए पूर्व कर्मों का यथोचित् न कम न अधिक, फल भोग ले। हम सब जानते हैं कि पशुओं में गाय भी एक पशु है। वैदिक धर्म में गाय को विश्व की माता कहा है जो कि उसके गुणों, मनुष्यों व प्रकृति को होने वाले लाभों की दृष्टि से उचित ही है। सृष्टि के आरम्भ से ही गो सभी मनुष्यों को अपने दुग्ध से पुष्ट व पोषित करती आ रही है। जिस प्रकार जीवात्मा का माता के गर्भवास में उसके भोजन व रुधिर आदि से शरीर बनता है, उसी प्रकार से हमारा शरीर भी अन्न व फलों सहित गोमाता के गोदुग्ध से बना हुआ है। अन्न व फलों की तुलना में गोदुग्ध अल्प प्रयास से प्रचुर व आवश्यक मात्रा में सुलभ हो जाता है और गुणवत्ता में भी यह सर्वश्रेष्ठ होने से इसकी दात्री गोमाता पूजनीय एवं वन्दनीय हो जाती है।

मनुष्य जीवन की आवश्यकताओं में प्रमुख आवश्यकता भोजन ही है। यदि उसे भोजन प्राप्त न हो तो भोजन से प्राप्त होने वाली शक्ति के अभाव में वह कुछ काम नहीं कर सकता। अन्न, फलों, वनस्पतियों व सब्जियों सहित गोदुग्ध का अपना अपना महत्व है। अलग-अलग प्रकार के अन्न से शरीर को अलग-अलग प्रकार के पौष्टिक तत्व प्राप्त होते हैं परन्तु गोदुग्ध पूर्ण आहार है जिसका सेवन करने से, यदि अन्न व फल आदि न भी मिलें तो भी, मनुष्य न केवल जीवित ही रहता है अपितु निरोग रहते हुए जीवन के सभी कार्य कर सकता है। गो माता की सन्तानें जिस प्रकार आरम्भ में गोदुग्ध पर पूरी तरह से निर्भर होती हैं और उनका विकास भलीभाँति होता है, इसी प्रकार गोदुग्ध से मनुष्य भी भोजन के सभी प्रकार के तत्वों को प्राप्त कर स्वस्थ व शक्तिशाली बनता है। गोदुग्ध के इसी गुण के कारण वेदों ने गो की महिमा का बखान किया है जिससे **मनुष्य उसे जानकर गोपालन व गोसेवा करके सुखी स्वस्थ जीवन व लम्बी आयु प्राप्त कर सके**। गोदुग्ध का सेवन करने वालों में रोगों से लड़ने की अद्भुत शक्ति होती है। वह कभी रुग्ण नहीं होते और यदि हो भी जायें तो शीघ्र ही स्वस्थ हो जाते हैं। गोदुग्ध अमृत के समान महौषधि है जो निरोग रखने व रोगों को दूर भगाने में लाभप्रद होती है। गोदुग्ध से अनेक स्वादिष्ट, स्वास्थ्यप्रद व शक्तिवर्धक पदार्थ दधि, मक्खन, मट्ठा, घृत, पंचगव्य आदि पदार्थ बनते हैं। गोघृत से अग्निहोत्र करने से पर्यावरण शुद्ध रहता है व प्रदूषण दूर होता है। अनेक साध्य व असाध्य कोटि के रोगों में भी गोघृत से अग्निहोत्र करने से लाभ होता है। वैदिक धर्म में अग्निहोत्र का दैनिक कर्तव्यों में विधान है। इससे अर्जित पुण्य से न केवल वर्तमान जीवन सुखदायक बनता है अपितु इसके फल से हमारा पुनर्जन्म भी उन्नत व सुखी होता है।

गोदुग्ध के साथ ही गोमूत्र भी औषधीय गुणों से समाविष्ट है। गोमूत्र के सेवन से उदर कृमियों पर लाभकारी प्रभाव होने के साथ त्वचा आदि के अनेक रोग दूर होते हैं। खेती वा कृषि में खाद व कृमियों के नाश के लिए भी गोबर व गोमूत्र आदि का

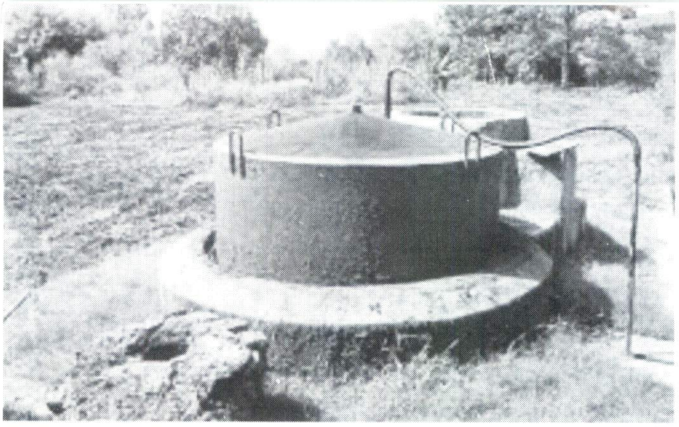

प्रयोग उपयोगी होता है। **गोबर व गोमूत्र से बनी खाद स्वादिष्ट व स्वास्थ्यवर्धक अन्न उत्पन्न करने में सर्वाधिक लाभकारी होती है।** रासायनिक खाद का प्रयोग करने से अनेक शारीरिक रोग होते हैं और इस पर धन भी बहुत व्यय होता है। गोबर से ग्रामीण अपने झोपड़ीनुमा कच्चे निवासों में लेपन करते हैं जिससे स्वच्छता व शुद्धि सम्पादित होती है। गोबर के उपले बनाकर रसोई के लिए ईंधन के रूप में प्रयोग किया जाता है। अन्य सभी प्रकार के ईंधन वायु प्रदूषण करने के साथ भोजन पकाने वाले पर भी अपना दुष्प्रभाव डालते हैं जबकि गोबर का ईंधन के रूप में प्रयोग अन्य ईंधनों से कहीं ज्यादा सुरक्षित होता है। इससे जो धुआँ होता है वह वनस्पतियों का सबसे अच्छा भोजन होता है। गोदुग्ध, गोमूत्र व गोबर आदि सभी पदार्थ अर्थ की दृष्टि से भी देश व परिवार के लिए बहुत लाभकारी सिद्ध होते हैं।

गाय से बछिया या बछड़े होते हैं जो कृषि कार्यों सहित अनेक प्रकार से देश व समाज के लिए उपयोगी होते हैं। गाय अमृत के समान गोदुग्ध देती है जिसके बदले में हमें उसे मात्र प्रकृति में सर्वत्र सुलभ घास आदि वनस्पतियाँ ही खिलानी होती हैं। आज देश में एक श्रमिक प्रतिदिन २०० से ४०० रुपये कमाता है। महीने में यदि उसने २० दिन काम किया तो उसकी आय ४,००० से ८,००० रुपये ही होती है। इस आय से उसे अपने ५ या ७ परिवार जनों का पालन भी करना होता है और अपनी शारीरिक शक्ति को बनाये रखना होता है। ऐसी स्थिति में वह बाजार में ६० रुपये लिटर वाला दूध नहीं ले सकता। इस आय वाला व्यक्ति शहरों में किराये का एक कमरा भी नहीं ले सकता और न ही अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दे सकता है। ऐसे में यदि किसी निर्धन परिवार में एक या दो गाय हों तो वह उससे दुग्ध की अपनी आवश्यकता पूरी करके शेष दूध को अन्यों में बेच कर अपना निर्वाह कर सकते हैं। इस दृष्टि से गाय का महत्व सर्वाधिक सिद्ध होता है। गाय माता से हमें बैल प्राप्त होते हैं जो खेत जोतने और कृषि के अनेक कार्यों सहित बैलगाड़ी में भी सामान ढोने के काम आते हैं। गाय से न केवल गोदुग्ध, गोबर व गोमूत्र ही प्राप्त होते हैं अपितु गाय की स्वाभाविक मृत्यु होने पर उसका चर्म भी हमारे पैरों की रक्षा करता है। इतने उपयोगी जीव वा पशु का प्रत्येक मनुष्य कितना ऋणी है वह वही व्यक्ति जान सकता है जिसकी आत्मा और संस्कार पवित्र हों। आजकल अंग्रेजी व पश्चिमी तौर तरीकों वाली जीवन शैली ने मनुष्य के मन से अंहिसा व सम्वेदना जैसी पवित्र भावनाओं को काफी मात्रा में कम कर दिया है। यही कारण है कि पशुओं के प्रति देश व संसार में जो हिंसा होती है, उसका कहीं कोई विशेष विरोध नहीं करता।

मनुष्य मनुष्य तभी होता है जब वह अपना प्रत्येक कार्य सोच विचार कर अर्थात् सत्य व असत्य का विचार कर करे। जब हम गाय आदि पशुओं की बात करते हैं तो हमें उसके सुख व दुख पर भी ध्यान देना चाहिये। हमें कांटा लगता है तो हमें दुःख होता है। कोई हमारे प्रति हिंसा का कार्य करता है तो भी हमें दुःख होता है। यहाँ तक कि अनेक लोग रुग्ण होने पर डॉक्टर से इंजेक्शन लगाने में भी डरते हैं। अतः हमें कोई अधिकार नहीं है कि हम गाय वा किसी अन्य पशु का गला काटें, उसकी हत्या करें व उसका मांस खायें। पशु हत्या व मांसाहार मानव स्वभाव के विपरीत क्रूरता है जिसका कारण अज्ञान व कुसंस्कार है। ऐसे लोग मनुष्य कहलाने योग्य नहीं हैं क्योंकि उनका कार्य मनन व सत्यासत्य का विचार कर नहीं हो रहा है। मांसाहारी लोगों से हम पूछना चाहते हैं कि जब परमात्मा के न्याय के अनुसार तुम्हें भी ऐसे ही कष्टों से गुजरना होगा तो तुम्हें कैसा लगेगा? इस प्रश्न पर शायद कोई विचार करना भी नहीं चाहेगा। परन्तु कर्मफल सिद्धान्त के अनुसार ऐसा होता है, ऐसा होगा, यह असम्भव नहीं है। **'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्'** के अनुसार हमारे प्रत्येक अच्छे व बुरे कर्म का उसी के अनुरूप, उतनी ही मात्रा में न कम और न अधिक सुख व दुख हमें मिलेगा जैसा हमने इस जीवन में दूसरों के प्रति किया है। जो लोग पशु हिंसा के कार्य में लगे हैं या जो मांस खाते हैं, वह इस पर अवश्य विचार करें। महर्षि मनु ने लिखा है कि मांसाहार की अनुमति देने वाला, पशु की हत्या करने वाला, मांस बेचने वाला, मांस पकाने वाला, मांस परोसने वाला और खाने वाला, यह सब बराबर पाप के भागी हैं। इन सभी लोगों को अपने आगामी पुनर्जन्म पर अवश्य विचार करना चाहिये।

गाय देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी ने 'गोकरुणानिधि' नाम से एक पुस्तक लिखी है जिसमें गोरक्षा के महत्व सहित गाय से होने

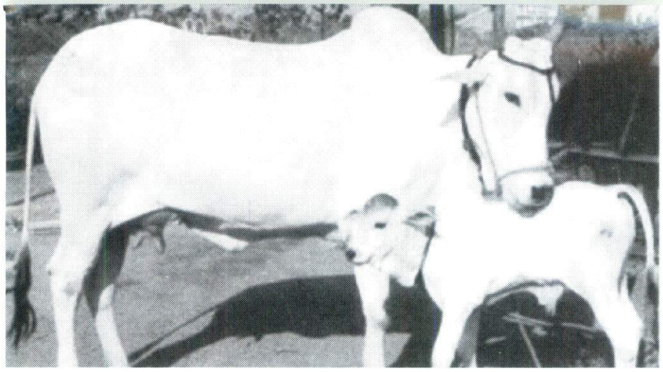

वाले आर्थिक लाभों का उल्लेख भी किया है। सत्यार्थप्रकाश के दशम समुल्लास में भी गोरक्षा के लाभों का वर्णन है। महर्षि ने गणित से गणना करके सिद्ध किया है कि एक गाय की एक पीढ़ी कुल दूध व बैलों से उत्पन्न अन्न से एक समय में ३,९६,७६० लोगों का पालन होता है। इससे गोरक्षण व गोसंवर्धन के महत्व का अनुमान लगाया जा सकता है। यही कारण था कि महाभारतकाल व उसके कुछ समय बाद तक हमारा देश वीरों व वेद ज्ञानियों की भूमि रहा है। यहाँ दूध की नदियां बहती थीं। स्त्री व पुरुष की एक सौ वर्ष की आयु होना आम बात थी। १०० से १६० व उससे भी अधिक आयु के लोग महाभारत काल में रहे हैं। गाय की ही तरह बकरी की एक पीढ़ी के दूध से भी एक समय में २५,९२० लोगों का पालन होता है। गाय व बकरी की ही तरह भैंस, हाथी, घोड़े, ऊँट, भेड़ व गधों से भी अनेक उपकार होते हैं। हमने गाय से कुछ थोड़े से ही लाभों का वर्णन किया है। गाय से होने वाले व्यापक लाभों पर देश में अनेक ग्रन्थ व पुस्तकें उपलब्ध हैं जिनका अध्ययन किया जाना चाहिये। लेख की समाप्ति पर महर्षि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश से कुछ विचार प्रस्तुत कर रहे हैं। वह लिखते हैं **'इन गाय आदि पशुओं को मारने वालों को सब मनुष्यों की हत्या करने वाले जानियेगा। देखो ! जब आर्यों का राज्य था तब ये महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे, तभी आर्यावर्त वा अन्य भूगोल देशों में बड़े आनन्द में मनुष्यादि प्राणि वर्तते थे। क्योंकि दूध, घी, बैल आदि पशुओं की वृद्धि होने से अन्न रस पुष्कल प्राप्त होते थे। जब से विदेशी मांसाहारी इस देश में आकर, गो आदि पशुओं के मारने वाले मद्यपायी राज्याधिकारी हुए हैं, तब से क्रमशः आर्यों के दुःख की बढ़ती होती जाती है। क्योंकि 'नष्टे मूले नैव फलं न पुष्पम्।'** जब (गोहत्या करके सुखरूपी) वृक्ष का मूल ही काट दिया जाय तो (फिर सुखरूपी) फल फूल कहाँ से हों।' कोई मनुष्य कुछ भी व कितना भी कर लें वह ईश्वर, पृथिवीमाता व गोमाता के ऋण से जन्म-जन्मान्तरों में भी उऋण नहीं हो सकता।

- १९६, चुक्खूवाला- २, देहरादून- २४८००१
चलभाष- ०९४१२९८५१२१

□□□

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमानू आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए.

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

पुण्यकर्म से जग यश गाता,
पावन होता मन।
पुण्यकर्म के बल पर ही,
जगमग होता जीवन।।

सत्यार्थ सौरभ घर-घर पहुँचावें

सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

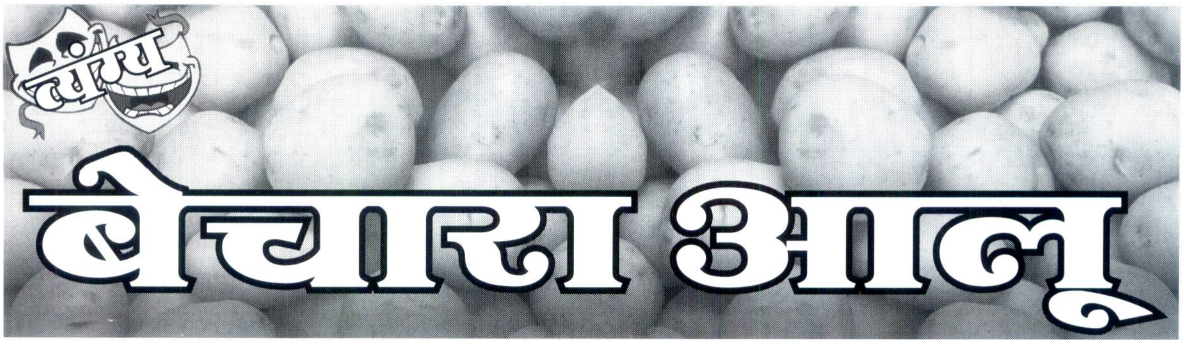

व्यंग्य

बेचारा आलू

बादशाह, बादशाह होता है चाहे ताश के पत्तों का बादशाह, फिल्म लाईन का बादशाह या अपने देश पर हकूमत करने वाला बादशाह हो। मत पूछो बादशाहियत छिनने के बाद दिमाग किस तरह खराब हो जाता है। अंग्रेजों के जमाने में शक्तियाँ छिन जाने के बावजूद भी बाहदुरशाह जफर को दिल्ली का बादशाह भी समझा जाता रहा है। इधर, हमारे सब्जियों के बादशाह आलू हैं, उनका भी बुरा हाल हो रहा है। बेचारा आलू दुनिया में सभी मुल्कों की सभी प्रकार की जरूरतें पूरी करता है। बहुत सारी सब्जियों के साथ मिलकर हमारे खाने के स्वाद को हमारे मुताबिक बनाता है। यह आलू है जिसके चिप्स बना लो, टिक्कियाँ तल लो, रायते में मिला

लो, आलू बैंगन, आलू मेथी, आलू गोभी, आलू गाजर, आलू मटर या फिर आलू की खाली सब्जी बना लो। लेकिन इस सारे के बावजूद अगर पैदावार ज्यादा होने पर बेचारे आलू की कद्र कम हो और इसकी बेकद्री करने के लिये यमुनानगर जैसे प्रतिष्ठित शहर में इसे सड़कों पर फेंक दिया जाये तो इससे ज्यादा बदकिस्मती क्या हो सकती है? कहाँ तो आलू-टमाटर का भाव ५०-५० रु. किलो और कहां ३-५ रु. किलो है। हे राम क्या बेइन्साफी है। बेचारा आलू निराशा की स्थिति में गलियों में भटक रहा है, लेकिन कोई पूछने वाला, इन्साफ करने वाला भी नहीं। मेरा मानना है कि मन ही मन यह आलू जल, भुन तो रहा होगा और कह रहा होगा 'बच्चे लोगों, मेरा समय आने दो मैं तुम सबको बारी-बारी देख लूँगा।'

लेकिन हमारी दुनिया में आलू जैसी प्रवृत्ति तथा प्रकृति के लोग भी होते हैं। जो सब किसी के साथ हाथ मिला लेते हैं। ऐसे आदमी 'गंगा गये तो गंगाराम' तथा 'यमुना गये तो यमुनादास' बन जाते हैं। आलू का मूल महत्व हमेशा से वही है लेकिन आलू प्रकृति के लोगों की पोल जल्दी ही खुल जाती है। लोग जल्दी ही समझ जाते हैं कि यह आदमी हमें बेवकूफ बना रहा है, उसे कोई अपने पास भी नहीं फटकने देता। लेकिन हाँ, आलूओं की तरह राजनीति में भी अमरसिंह जैसों का मूल्य भी कभी घटता तो कभी बढ़ता रहता है।

लोकतंत्र में जनता जनार्दन होती है। जिससे प्रसन्न हो जाये चुनकर संसद या विधानसभा भेज दे और जिससे खफा हो जाये उसे कूड़ेदान में फेंक दे। कोई भी राजनेता मतदाताओं को बहुत देर तक बेवकूफ नहीं बना सकता। लेकिन हमारे राजनेता हैं, कुर्सी पर बैठने के आद जनता का मूल्य भी आलूओं की तरह कम आँकने लगते हैं। यह मानना पड़ेगा कि जनता आलू है जिसके बिना राजनेताओं का काम नहीं चल सकता। अन्ना हजारे ने सरकार को इन आलूओं की असली कीमत बता दी है। पैदावार जरूरत से ज्यादा होने पर बेशक आलू अवारा बनकर सड़कों पर भटक रहे हों लेकिन 'सब दिन होत ना एक समान' वाली बात ही आखिर लागू होकर रहती है। यही आलू जो आज ५ रु. बिक रहे हैं, समय आने पर यही ५० रु. किलों बिकेंगे। तब आलू आँख मटका कर तथा सीटी बजाकर लोगों से पूछेगा 'क्यों प्यारो हमें पहचाना, हम ही हैं सब्जियों के बादशाह आलू! हमारे बिना काम चला सकते हो तो चलाओ। 'लेकिन लोग गिड़गिड़ा कर यही कहेंगे' नहीं, जहांपनाह! आप सर्वशक्तिमान हो, आप सर्वव्यापी हो, आपकी असली ताकत कौन पहचान सकता है।'' चुनाव आने पर आलूरूपी मतदाता भी उम्मीदवारों से यहीं कहेंगे 'बेशक आलूओं की तरह आपने हमें बेकार समझ लिया था लेकिन सच्ची बात तो यह है कि जिस तरह आलू के बिना जनता का काम नहीं चल सकता, उसी तरह राजनेताओं का भी आलू रूपी मतदाताओं के बिना काम नहीं चल सकता। अतः जोर से बोलो 'आलू महाराज की जय'।

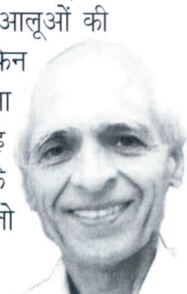

□□□

- प्रो. शामलाल कौशल, रोहतक

तलाक तलाक तलाक

दीन-धर्म की आड़ में नाइंसाफी भले ही दुनिया की रवायत रही हो, लेकिन अब किसी अदृश्य शक्ति का खौफ दिखाकर जागरूक होते नागरिकों का शोषण संभव नहीं रह गया है। तीन तलाक जैसी कुप्रथा की चपेट में आकर अचानक बेसहारा हो चुकी महिलाएं धर्म के अलंबरदारों से न सिर्फ सवाल कर रही हैं, बल्कि सुप्रीम कोर्ट तक जाकर अपने अधिकार तलाश रही हैं। समाज का प्रगतिशील तबका भले इन पीड़ित महिलाओं के अधिकार का हामी हो, लेकिन सवाल उठते ही धर्म के मठ और गढ़ हिलने लगे हैं।

पिछले साल अक्टूबर में उत्तराखंड के देहरादून की ३५ साल की शायरा बानो की दुनिया उजड़ गई। उनके पति इलाहाबाद में रहते हैं। वे उत्तराखंड में अपने माता-पिता के घर इलाज के लिए गई थीं, तब उन्हें पति का तलाकनामा मिला, जिसमें लिखा था कि वे उनसे तलाक ले रहे हैं। अपने पति से मिलने की उनकी कोशिश नाकाम रही थी। तहलका से बातचीत में उन्होंने बताया, 'तलाक भेजने के बाद रिजवान ने अपना फोन बंद कर रखा था। मेरे पास उनसे संपर्क करने का कोई रास्ता नहीं था। मैं अपने बच्चों को लेकर चिंतित हूं। उनकी जिंदगी बर्बाद हो गई है। कोई भी हमारी मदद के लिए नहीं आया।

शायरा बानो को उनके शौहर ने एक पत्र के जरिए सूचित

किया कि उसने उन्हें तलाक दे दिया है। यह पत्र १० अक्टूबर, २०१५ को लिखा गया था। उन्हें उनके पति ने फोन पर बताया कि कुछ जरूरी कागज भेज रहा हूं। मगर जब शायरा ने इन कागजात को खोलकर देखा तो यह तलाकनामा था। इस दो पन्ने के पत्र में कई बातों के अलावा यह साफ-साफ लिखा था, 'शरीयत की रोशनी में यह कहते हुए कि मैं तुम्हें तलाक देता हूं, तुम्हें तलाक देता हूं, तुम्हें तलाक देता हूं, इस तरह तिहरा तलाक देते हुए मैं मुकिर आपको अपनी जैजियत से खारिज करता हूं। आज से आप और मेरे दरमियान बीवी और शौहर का रिश्ता खत्म। आज के बाद आप मेरे लिए हराम और मैं आपके लिए नामहरम हो चुका हूं।'

इन सबसे निराश शायरा बानो ने फरवरी में सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दायर की। इसमें उन्होंने तीन बार तलाक बोलकर तलाक देने की प्रक्रिया पर पूरी तरह से रोक लगाने की मांग की। उनका कहना है, 'जब निकाह के वक्त शौहर और बीवी दोनों की रजामंदी की जरूरत होती है तो फिर तलाक के वक्त क्यों नहीं? मौजूदा हलाला की व्यवस्था औरतों की इज्जत के साथ खिलवाड़ है, बहुविवाह के जरिए यह बताया जाता है कि मर्द के लिए औरत कितनी मामूली-सी चीज है।' सुप्रीम कोर्ट में २३ फरवरी, २०१६ को दायर याचिका में शायरा ने गुहार लगाई है कि आल इंडिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड (एआईएमपीएलबी) के तहत दिए जाने वाले तलाक-ए-बिद्दत यानी तिहरे तलाक, हलाला और बहुविवाह को गैर-कानूनी और असंवैधानिक घोषित किया जाए। गौरतलब है कि शरीयत कानून में तिहरे तलाक को मान्यता दी गई है। इसमें एक ही बार में शौहर अपनी पत्नी को तलाक-तलाक-तलाक कहकर तलाक दे देता है।

कुछ ऐसा ही किस्सा २८ साल की रहमान आफरीन के साथ हुआ। आफरीन उत्तराखंड के काशीपुर की रहने वाली हैं। बचपन में ही आफरीन के अब्बू का इंतकाल हो चुका था। उनके बड़े भाई की भी मौत हो चुकी है। पढ़ने में हमेशा अव्वल रहने वाली आफरीन ने एमबीए करने के बाद एक वैवाहिक वेबसाइट के जरिए इंदौर के एडवोकेट से निकाह किया था। शादी के एक साल बाद ही उनकी अम्मी का भी इंतकाल हो गया। इसके बाद काशीपुर में उनका घर छूट गया। घर में किसी के न होने की वजह से जयपुर स्थित

मामा का घर ही उनका मायका बन गया। मां की मौत के बाद जयपुर अपने मायके आईं आफरीन के पैरों तले जमीन तब खिसक गई जब उन्हें शौहर का भेजा हुआ स्पीड पोस्ट मिला। उसमें लिखा था कि मैं तुम्हें तीन बार तलाक-तलाक-तलाक कहता हूं क्योंकि तुम मेरे घरवालों से ज्यादा खुद के घरवालों का ख्याल रखती हो और मुझे शौहर होने का सुख नहीं देती। अब आफरीन ने स्पीड पोस्ट से तीन बार तलाक लिखकर तलाक देने के पति के फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में अर्जी लगाई है।

आफरीन का आरोप है कि शादी के बाद से ही उनको दहेज के लिए ताने दिए जाते थे जो बाद में मारपीट में बदल गया। आफरीन की शादी २४ अगस्त २०१४ को इंदौर के सैयद असार अली वारसी से हुई थी। १७ जनवरी, २०१६ को शौहर ने स्पीड पोस्ट से तीन बार तलाक लिखकर भेज दिया। शायरा बानो के बाद आफरीन देश की दूसरी मुस्लिम महिला हैं जो इस तरह तीन तलाक के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट पहुंची हैं। सुप्रीम कोर्ट ने राज्य और केंद्र सरकार, महिला आयोग समेत सभी पक्षों को इस मामले में नोटिस भेजकर जवाब मांगा है।

'जब निकाह के वक्त शौहर और बीवी दोनों की रजामंदी की जरूरत होती है तो फिर तलाक के वक्त क्यों नहीं?मौजूदा हलाला की व्यवस्था औरतों की इज्जत के साथ खिलवाड़ है'

उत्तराखंड की शायरा बानो और जयपुर की आफरीन का यह किस्सा केवल उनका नहीं बल्कि न जाने कितनी और उन मुस्लिम औरतों का दर्द बयां करता है जो तिहरे तलाक या हलाला का सामना कर चुकी हैं। तमिलनाडु के त्रिची की रहने वाली मरियम को उनके शौहर ने वाट्सऐप के जरिए तलाक दे दिया। शरीयत में मर्द को दिए जुबानी तिहरे तलाक को आधार बनाकर इसे मंजूरी भी मिल गई। मरियम को न तो मेहर की रकम मिली और न ही किसी तरह का हर्जाना मिला। जबकि उनके निकाह में मेहर की रकम सिर्फ एक हजार रुपये थी। उनकी उम्र २६ साल है।

ऐसा ही कुछ तमिलनाडु के डिंडीगुल की एक मुस्लिम औरत फौजिया (बदला हुआ नाम) के साथ हुआ जिन्हें काजी के जरिए तलाकनामा भेज दिया गया। मेहर की करीब ५५० रुपये की मामूली रकम भी उन्हें नहीं दी गई। किसी अन्य हर्जाने का तो जिक्र भी नहीं हुआ। मध्य प्रदेश के भोपाल जिले की २० साल की शाइस्ता को भी जुबानी तलाक दे दिया गया। उन्हें भी मेहर की रकम और मेंटीनेंस नहीं मिला। गौर करने वाली बात यह है कि उनके पति खुद काजी थे। महाराष्ट्र की आर. अंसारी को भी एक दिन अचानक तलाक-तलाक-तलाक कहकर मेहर की ७८६ रुपये की मामूली रकम देकर उनके पति ने छोड़ दिया। तीन तलाक के दुरुपयोग के ये कुछ नमूने भर हैं। सूची और कहानी बहुत लंबी है।

इस मामले में सुप्रीम कोर्ट में शायरा के वकील बालाजी श्रीनिवासन का कहना है, 'इस याचिका में शरीयत के दकियानूसी कानूनों को चुनौती दी गई है, इसलिए हंगामा हो रहा है। हमने याचिका में कुछ ठोस कानूनी मामलों का जिक्र किया है जिससे यह साबित होता है कि तिहरा तलाक, निकाह, हलाला और बहुविवाह किस तरह से मुस्लिम औरतों को गुलाम बनाए रखने के तरीके हैं। साथ ही इस तरह के मामलों में आए कुछ मिसाल बने फैसलों का भी जिक्र किया है जो शायरा के केस में मददगार साबित हो सकते हैं। कुछ ऐसे विशेषज्ञों की टिप्पणियों और चर्चित सर्वे को भी दर्ज किया है जो इस ओर इशारा करते हैं कि इस तरह की प्रथाएं मुस्लिम औरतों पर एक तरह से हिंसा करने का एक जरिया बनी हुई हैं।'

गौरतलब है कि भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में बहुविवाह को एक कुरीति माना गया है। हालांकि यहां यह सिर्फ मुसलमानों के लिए कानूनन जायज है। दुर्भाग्य से इक्कीसवीं सदी में भी ऐसी प्रथा को कानूनी मान्यता मिली हुई है जिससे मुस्लिम महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, शारीरिक और भावनात्मक खतरा होता है।

ऐसे मामले में अगर हम बाकी समुदायों की चर्चा करें तो सरला मुद्गल बनाम केंद्र सरकार मामले में यह बात प्रकाश में आई कि ईसाइयों में दो विवाह को क्रिश्चयन मैरिज ऐक्ट १८७२ के तहत दंडनीय अपराध घोषित कर दिया गया था, पारसियों में पारसी मैरिज ऐंड डिवोर्स ऐक्ट १९३६ के तहत और हिंदू, बौद्ध, सिख व जैन धर्म में हिंदू मैरिज ऐक्ट १९५५ के तहत इसे दंडनीय अपराध घोषित किया गया लेकिन मुस्लिमों में इस कुप्रथा को खत्म नहीं किया गया। इसके चलते भारत में दूसरे धर्म की महिलाओं के मूलाधिकार तो सुरक्षित किए गए मगर भारतीय मुस्लिम औरतें इस कुप्रथा को आज तक झेलने को मजबूर हैं।

इसके अलावा भारत सरकार की एक उच्चस्तरीय कमेटी ने

वर्ष २०१५ में इस मामले पर अपनी रिपोर्ट पेश की थी। इस रिपोर्ट का शीर्षक **'वूमेन ऐंड द लॉ- एन असेसमेंट ऑफ फैमिलीज ला विद फोकस आन ला रिलेटिंग टू मैरिज, डिवोर्स, कस्टडी इनहैरिटेंस ऐंड सक्सेशन' था।** इस रिपोर्ट में मुस्लिम महिलाओं की बदहाल स्थिति का हवाला देते हुए तिहरे तलाक और बहुविवाह पर रोक लगाने की बात कही गई थी।

भारत में तीन तलाक यानी तलाक-ए-बिद्दत का इस्तेमाल बहुत ही खतरनाक तरीके से हो रहा है। तकनीक के विकास के साथ-साथ यह भी हो गया कि मुस्लिम पति फोन, ईमेल या पत्र के जरिए भी अपनी पत्नियों को तलाक देने लगे हैं। इस संदर्भ में ओडिशा में नगमा बीवी का मामला चर्चित हुआ था। नगमा को उनके शौहर ने नशे की हालत में तलाक दे दिया था। सुबह उसे होश आया कि उसने गलती कर दी है। मगर मुस्लिम धार्मिक गुरुओं ने उन दोनों को साथ रहने की इजाजत नहीं दी। औरत को निकाह हलाला के लिए भेज दिया गया था। इस तरह के मामलों को लेकर नवंबर, २०१५ में भारतीय मुस्लिम महिला आंदोलन (बीएमएमए) नाम की संस्था ने एक सर्वे जारी किया। सर्वे में देश के दस राज्यों की तलाकशुदा करीब पाँच हजार औरतों से बात की गई। सर्वे में तलाक के तरीके, उनके साथ हुई शारीरिक-मानसिक हिंसा, मेहर की रकम, निकाहनामा, बहुविवाह जैसे कई मुद्दों पर खुलकर बात हुई। जो नतीजे आए, वे बेहद चौंकाने वाले थे। रिपोर्ट में कहा गया कि ९२.१ प्रतिशत महिलाओं ने जुबानी या एकतरफा तलाक को गैरकानूनी घोषित करने की मांग की। वहीं ९१.७ फीसदी महिलाएं बहुविवाह के खिलाफ हैं।

अधिकांश महिलाओं ने माना कि मुस्लिम महिलाओं को न्याय दिलाने के लिए मुस्लिम फैमिली ला में सुधार करने की जरूरत है।

तीन तलाक को लेकर शायरा बानो के सुप्रीम कोर्ट जाने के बाद देश में भी तीन तलाक की व्यवस्था को खत्म करने की आवाज तेज होने लगी है। इसके खिलाफ एक आनलाइन याचिका पर करीब ५०००० मुस्लिम महिलाओं ने हस्ताक्षर किए हैं। हस्ताक्षर करने वाले लोगों में बड़ी संख्या में मुस्लिम पुरुष भी शामिल थे। याचिकाकर्ता बीएमएमए चाहता है कि राष्ट्रीय महिला आयोग इसमें हस्तक्षेप करे। बीएमएमए ने महिला आयोग की अध्यक्ष ललिता कुमारमंगलम को लिखे पत्र में कहा कि उसने अपने अभियान के पक्ष में ५०००० से अधिक हस्ताक्षर लिए हैं। हमने यह पाया है कि महिलाएं जुबानी-एकतरफा तलाक की व्यवस्था पर पाबंदी चाहती हैं। 'सीकिंग जस्टिस विदिन फैमिली' नामक हमारे अध्ययन में पाया गया कि ९२ फीसदी मुस्लिम महिलाएं तलाक की इस व्यवस्था पर पाबंदी चाहती हैं। इस मामले में ललिता कुमारमंगलम का कहना है कि आयोग सुप्रीम कोर्ट में शायरा बानो के मुकदमे का समर्थन करेगा। उनका कहना है, 'राष्ट्रीय महिला आयोग पहले से ही इस मुकदमे का हिस्सा है। हम इस महीने सुप्रीम कोर्ट में अपना जवाब दाखिल करेंगे। इस मांग का २०० फीसदी समर्थन करते हैं। जो भी बन पड़ेगा, हम करेंगे।'

बीएमएमए ने इसे लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भी खत लिखा है। अपने खत में बीएमएमए ने कहा है कि मुस्लिम महिलाओं को न्याय दिलाने के लिए या तो शरीयत एप्लीकेशन ला, १९३७ और मुस्लिम मैरिज ऐक्ट, १९३९ में संशोधन किए जाएं या फिर मुस्लिम पर्सनल कानूनों का एक नया स्वरूप लाया जाए। बीएमएमए ने मुस्लिम महिलाओं, वकीलों, धर्म के जानकारों से बातचीत और कुरान के सिद्धांतों के आधार पर मुस्लिम फैमिली ला का एक ड्राफ्ट तैयार किया है। इसमें कहा गया है कि निकाह के लिए लड़के और लड़की की आयु २१ और १८ वर्ष तय हो, मेहर की रकम लड़के की वार्षिक आय के बराबर हो, जुबानी तलाक खत्म हो, तलाक देने के लिए तीन महीने का समय तय हो यानी एक बार में तीन तलाक देना बंद हो, तलाक एकतरफा न हो, तलाक के बाद जरूरी तौर पर शौहर बीवी के भरण पोषण की जिम्मेदारी ले, हलाला व बहुविवाह को गैर-कानूनी घोषित किया जाए और तलाक के बाद गुजारा भत्ता मुस्लिम वूमेन प्रोटेक्शन आफ राइट्स आन डिवोर्स ऐक्ट, १९८६ के अनुसार दिया जाए।

भारतीय अदालतों ने भी तीन तलाक को खत्म करने की दिशा में कुछ अहम फैसले सुनाए हैं। २००८ के एक मामले में फैसला देते हुए दिल्ली हाई कोर्ट के एक जज बदर दुरेज अहमद ने कहा था कि भारत में तीन तलाक को एक तलाक (जो वापस लिया जा सकता है) समझा जाना चाहिए। इसी

तरह से गुवाहाटी हाई कोर्ट ने जियाउद्दीन बनाम अनवरा बेगम मामले में कहा था कि तलाक के लिए पर्याप्त आधार होने चाहिए और सुलह की कोशिशों के बाद ही तलाक होना चाहिए। इस साल मई में सेना के एक जवान की ओर से पत्नी को बोले गए 'तीन तलाक' को कोर्ट ने खारिज कर दिया। मिलिट्री ट्रिब्यूनल ने कहा कि कोई भी व्यक्ति पर्सनल ला की आड़ में देश के संविधान के खिलाफ नहीं जा सकता है, जो सभी धर्म की महिलाओं के हक की सुरक्षा की बात करता है।

आर्म्ड फोर्सेज ट्रिब्यूनल की लखनऊ बेंच ने कहा कि पर्सनल ला या भारत का संविधान भी किसी भी पति को यह हक नहीं देता कि वह अपनी बीवी को जुबानी, नोटिस भेजकर या मनमाने तरीके से बिना उसकी अनुमति के तलाक दे दे। बेंच ने कहा कि शादी महिला और पुरुष की स्वीकृति पर आधारित होती है। जब तक दो लोग सहमत नहीं होते हैं, तब तक कोई निकाह नहीं हो सकता। शादी एक तरह का कान्ट्रैक्ट है, जिसे एकतरफा तौर पर खत्म नहीं किया जा सकता।

वैसे आल इंडिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड (एआईएमपीएलबी) तीन तलाक की प्रथा में किसी भी फेरबदल के खिलाफ अब भी अड़ा हुआ है। भारत में शरई कानूनों की हिफाजत के लिए बोर्ड ने लड़ाई का ऐलान किया है। पांच जून, २०१६ को लखनऊ के मशहूर मदरसे नदवातुल उलूम में हुई बोर्ड की बैठक में हैदराबाद के सांसद मौलाना असदुद्दीन औवेसी भी शामिल हुए। बोर्ड ने एक साथ तीन तलाक को शरई एतबार से जायज करार दिया है। इसके अलावा तलाक, गुजारा भत्ता, चार शादियां आदि मामले में शरीयत कानून के खिलाफ आ रहे अदालती फैसलों को बोर्ड ने पर्सनल ला में दखलअंदाजी माना है। इस दौरान बोर्ड ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास करके कहा कि इस मामले में प्रधानमंत्री से भी संपर्क करके कहा जाएगा कि शरई मामलों में दखल देने की कोशिशों पर विराम लगाया जाए। साथ ही बोर्ड ने भारत में शरई अदालतों (दारुल कजा) की तादाद में इजाफे का भी फैसला किया है। बोर्ड ने कहा कि यह संदेश देने की कोशिश की जा रही है कि मुस्लिम औरतों की स्थिति ठीक नहीं है, जबकि वास्तविकता इसके एकदम उलट है। गौरतलब है कि शायरा बानो द्वारा दायर की गई याचिका में एआईएमपीएलबी भी पक्षकार है।

हालांकि इस मसले पर दुनिया जिस तरफ आगे बढ़ रही है, एआईएमपीएलबी का रुख उसके बिल्कुल उलट है। **जानने वाली बात यह है कि पाकिस्तान और बांग्लादेश समेत तकरीबन २२ मुस्लिम देशों ने अपने यहां सीधे-सीधे या अप्रत्यक्ष रूप से तीन बार तलाक की प्रथा खत्म कर दी है।** इस सूची में तुर्की और साइप्रस भी शामिल हैं जिन्होंने धर्मनिरपेक्ष पारिवारिक कानूनों को अपना लिया है। ट्यूनीशिया, अल्जीरिया और मलेशिया के सारावाक प्रांत में कानून के बाहर किसी तलाक को मान्यता नहीं है। **ईरान में शिया कानूनों के तहत तीन तलाक की कोई मान्यता नहीं है।** हमारे पड़ोसी देश श्रीलंका में तकरीबन १० फीसदी मुस्लिम आबादी है। वहां का कानून तुरंत तलाक वाले किसी नियम को मान्यता नहीं देता। मिस्र पहला देश था जिसने १९२९ में कानून-२५ के जरिए घोषणा की कि तलाक को तीन बार कहने पर भी उसे एक ही माना जाएगा और इसे वापस लिया जा सकता है। १९३५ में सूडान ने भी कुछ और प्रावधानों के साथ यह कानून अपना लिया। आज ज्यादातर मुस्लिम देश-ईराक से लेकर संयुक्त अरब अमीरात, जार्डन, कतर और इंडोनेशिया तक ने तीन तलाक के मुद्दे पर इस विचार को स्वीकार कर लिया है।

पाकिस्तान में भी तीन तलाक की प्रथा नहीं है। वहां कोई भी व्यक्ति 'किसी भी रूप में तलाक' कहता है तो उसे यूनियन काउंसिल (स्थानी निकाय) के चेयरमैन को इस बारे में जानकारी देते हुए एक नोटिस देना होगा और इसकी कापी अपनी बीवी को देनी होगी। यदि कोई व्यक्ति ऐसा करने में असफल रहता है तो उसे एक साल की सजा हो सकती है। ५००० रुपये का जुर्माना देना पड़ सकता है। चेयरमैन को नोटिस देने के ९० दिन बाद ही तलाक प्रभावी माना जाएगा। नोटिस पाने के ३० दिन के भीतर चेयरमैन को एक पंच परिषद बनानी होगी जो तलाक के पहले सुलह करवाने की कोशिश करेगी। यदि महिला गर्भवती है तो तलाक ९० दिन या प्रसव, जिसकी समयावधि ज्यादा हो, के बाद ही प्रभावी होगा। संबंधित महिला तलाक होने के बाद भी अपने पूर्व पति से शादी कर सकती है और इसके लिए उसे बीच में किसी तीसरे व्यक्ति से शादी करने की जरूरत नहीं है।

बांग्लादेश में भी यही कानून लागू है।

बीएमएमए की सह-संस्थापक नूरजहां सफिया नियाज कहती हैं, 'तीन बार तलाक कहने से तलाक होने से बहुत सारी महिलाएँ परेशान हैं। फोन पर तलाक हो रहे हैं, वाट्सऐप पर हो रहे हैं और जुबानी तो हो ही रहे हैं। एक पल में महिला की जिंदगी पूरी तरह से बदल जाती है। **जुबानी तलाक एक गलत प्रथा है और महिलाओं के सम्मान के लिए इसे खत्म करना जरूरी है।** आप औरतों को कोई वस्तु नहीं समझ सकते। सोचिए ये सब २१वीं सदी में हो रहा है। यहां एक विधि सम्मत कानून की जरूरत है। जो कानून हैं, उनमें सुधारों की जरूरत है।'

उन्होंने कहा, 'कुरान के नाम पर, धर्म के नाम पर डरा-धमकाकर पितृसत्ता को ओर बढ़ावा दिया गया। कानूनी मसलों पर कुरान में ऐसा कुछ नहीं लिखा है। कुरान के गलत

सर्वोच्च अदालत पर पूरा भरोसा है। यहां पर मुस्लिम पर्सनल ला को ध्यान में रखते हुए फैसले दिए जाते हैं।'

एआईएमपीएलबी द्वारा तीन तलाक को जायज ठहराए जाने और खासकर उसकी महिला सदस्यों द्वारा इसकी पैरवी किए जाने के मामले पर शाइस्ता अंबर कहती हैं, 'एआईएमपीएलबी के सदस्य जमीनी हकीकत से रूबरू नहीं हैं। हम पिछले कई सालों से इस मसले पर काम कर रहे हैं। हमें पता है कि वास्तविकता क्या है। बोर्ड में जो महिला सदस्य हैं उनके पास जमीनी हकीकत की कितनी जानकारी है इस पर सर्वे करने की जरूरत है। वैसे एआईएमपीएलबी से हमारी कोई लड़ाई नहीं है। हमारा मानना है कि जो भी कुरान शरीफ की गलत व्याख्या करेगा या उसका पालन नहीं करेगा, हम उसके खिलाफ हैं। फिर चाहे वो एआईएमपीएलबी ही क्यों न हो।'

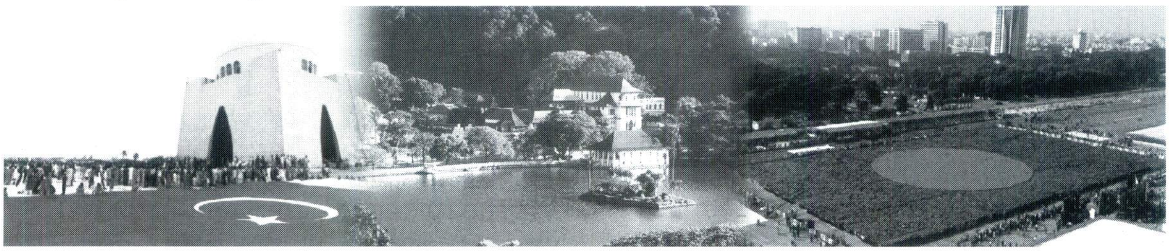

अर्थ निकाले गए हैं, उसमें चालाकी से हेर-फेर किया गया। दरअसल जिस भाषा में कुरान लिखी गई उसे लोग नहीं जानते थे तो इसका तर्जुमा किया गया और अपने हिसाब से अर्थ निकाले गए। हमने कुरान पढ़ा है और ये काफी प्रगतिशील है। उसमें कहीं बहुविवाह, जुबानी तलाक या हलाला की बात नहीं कही गई है।'

उत्तर प्रदेश की पहली महिला काजी हिना जहीर नकवी ने भी तीन तलाक पर प्रतिबंध लगाए जाने की मांग की है। उन्होंने कहा, 'मैं तीन तलाक की कड़े शब्दों में निंदा करती हूं। यहां तक कि कुरान में इस तरह का कोई निर्देश नहीं दिया गया, जिससे मौखिक तलाक को बढ़ावा दिया जाए। यह कुरान की आयतों का गलत मतलब निकाला जाना है। इसने मुस्लिम महिलाओं की जिंदगी को खतरे में डाल दिया है।'

आल इंडिया मुस्लिम महिला पर्सनल ला बोर्ड की अध्यक्ष शाइस्ता अंबर भी तीन तलाक का खुलकर विरोध करती हैं। वे कहती हैं, 'तीन तलाक कुरान शरीफ के कानूनों के खिलाफ है। कुरान शरीफ में एक ही बार में तीन तलाक की बात नहीं कही गई है। ऐसा तरीका जो कुरान के हिसाब से जायज नहीं है उसे स्वीकार नहीं किया जाएगा। जहां तक मामले के सुप्रीम कोर्ट में जाने की बात है, तो हमें देश की

जामिया मिलिया इस्लामिया की छात्रा लुबना सिद्दीकी का कहना है, 'हमारे देश में एक साथ तीन तलाक की जो व्यवस्था है और पर्सनल ला बोर्ड ने जिसे मान्यता दी है वो पूरी तरह कुरान व इस्लाम के मुताबिक नहीं है। कुरान में तीन महीने में तलाक की व्यवस्था की गई है। पुरुषवादी समाज ने तलाक की पूरी व्यवस्था को अपनी सहूलियत के हिसाब से बना दिया है। इसमें कुरान के मुताबिक संशोधन की सख्त जरूरत है।'

हालांकि मुस्लिम तुष्टीकरण और वोट बैंक की राजनीति के चलते राजनीतिक पार्टियों के नेता तीन तलाक के खात्मे के पक्षधर होने के बावजूद सीधी टिप्पणी करने से बचते हैं। कांग्रेस नेता मीम अफजल कहते हैं, 'कुरान में तलाक की जो व्याख्या की गई है वह तीन तलाक से मेल नहीं खाती है। कुरान में साफ कहा गया है कि तलाक तीन महीने में होना चाहिए।

तीन तलाक को लेकर मुस्लिम महिलाओं को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। मेरा मानना है कि अब वक्त आ गया है कि आल इंडिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड के सदस्य इस पर बैठकर विचार करें और ऐसा फैसला लें जो सभी के हित में हो।'

❑❑❑

साभार- तहलका

लोपामुद्रा

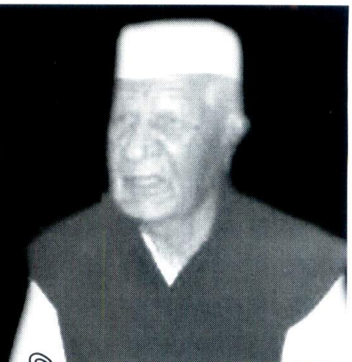

शिव नारायण उपाध्याय

लोपामुद्रा महर्षि अगस्त्य की पत्नी थीं। उनके पिता विदर्भ देश के राजा थे। ऐसा दृष्टिगोचर होता है कि लोपामुद्रा बालकपन से ही आध्यात्मिक विषयों में रुचि लेती थीं। उन्होंने योग्य अध्यापिकाओं से विद्या प्राप्त की थी। वे ब्रह्मचर्य और विद्या के महत्व को समझती थीं। आश्रम और वर्ण व्यवस्था में उनका पूर्ण विश्वास था। इसलिये उन्होंने राजसी जीवन की उपेक्षा कर एक श्रेष्ठ विद्वान् तपस्वी अगस्त्य को अपने पति के रूप में चुना। इनके पुत्र का नाम दृढ़स्यु था। महाभारत वन पर्व अध्याय ९४-९५ में लोपामुद्रा विषयक एक आख्यान है। बृहद्देवता में भी लोपामुद्रा विषयक आख्यान है।

ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त १७९ में उन्होंने अपने पति अगस्त्य के साथ कार्य किया है। ये दोनों ही इस सूक्त के दृष्टा हैं। इस सूक्त के मंत्रों में स्त्री के कर्त्तव्यों के विषय में बताया गया है! इस सूक्त में ब्रह्मचर्य के साथ विद्या ग्रहण करते हुए शरीर को सुडौल और दृढ़ बनाने की शिक्षा भी दी गई है! **सूक्त के चौथे मंत्र में लोपामुद्रा शब्द पड़ा है जिसका अर्थ स्वामी दयानन्द सरस्वती ने काम भावना से मुक्त 'कन्या' किया है।** सायण ने इस सूक्त को अगस्त्य लोपामुद्रा संवाद के रूप में लिया है। विदुषी स्त्रियों के लिए उचित है कि प्रतिदिन रात्रि के पिछले प्रहर में उठकर प्रभात के समय घर के आवश्यक कार्य यथा गृह की सफाई, स्नान, सन्ध्यावन्दन आदि के साथ पति की सेवा के कार्य सम्पादित करें। मंत्र की पहली ऋचा में कहा गया है-

पूर्वीरहं शरदः शश्रमाणा दोषा वस्तोरुषसो जरयन्तीः।
मिनाति श्रियं जरिमा तनूनामप्यू नु पत्नीर्वृषणो जगम्युः।।

पदार्थ- जैसे (अहम्) मैं (पूर्वीः) पहिले हुई (शरदः) वर्षों तथा (दोषाः) रात्रि (वस्तोः) दिन (जरयन्तीः) सबकी अवस्थाओं को जीर्ण करती हुई (उषसः) प्रभात वेलाओं पर (शश्रमाणा) श्रम करती रही हूँ। (अपिउ) और जैसे (तनूनाम्) शरीरों की (जरिमा) अतीव अवस्था को नष्ट करने वाला काल (श्रियम्) लक्ष्मी को (मिनाति) विनाशता है वैसे (वृषणः) वीर्य सेंचने वाले (पत्नीः) अपनी अपनी स्त्रियों को (नु) शीघ्र (जगम्युः) प्राप्त होवे।

भावार्थ- जैसे स्त्रियाँ बाल्यावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक प्रभात काल में घर के सब कार्य करती हैं। विवाहित महिलाएँ अपने पति की सेवा करती हैं। विद्या प्राप्ति के अनन्तर ही विवाह करके अपने अपने पतियों से श्रेष्ठ सन्तान को जन्म देती हैं। उन्हें अपने कर्त्तव्यों का उचित रीति से पालन करना चाहिए।

अगले मंत्र में बतलाया गया है कि शिक्षा किनसे प्राप्त करें?

ये चिद्धि पूर्व ऋतसाप आसन्त्साकं देवेभिरवदन्नृतानि।
ये चिदवासुर्नह्यन्तमापुः समू नु पत्नीर्वृषभिर्जगम्युः।।२।।

पदार्थ- (ये) जो (ऋतसापः) सत्य व्यवहार में व्यापक अथवा दूसरों को व्याप्त कराने वाले (पूर्वे) पूर्व विद्वान् (देवेभिः) विद्वानों के (साकम्) साथ (ऋतानि) सत्य व्यवहारों को (अवदन्) कहते हुए (ते, चित् हि) वे भी सुखी (आसन्) हुए और जो (नु) शीघ्र ही (पत्नीः) स्त्रीजन (वृषभिः) वीर्यवान् पतियों के साथ (समूजगम्युः) निरन्तर जावें (चित्) उनके समान (अवासुः) दोषों को दूर करें वे (उ अन्तम्) अन्त को (नही) नहीं (आपुः) प्राप्त होते हैं।

भावार्थ- ब्रह्मचर्य काल में विद्यार्थियों को उन्हीं से विद्या प्राप्त करनी चाहिए जो पूर्ण विद्वान् एवं चरित्रवान् हों। विद्या समाप्ति पर उन ब्रह्मचारणियों के साथ विवाह करें जो अपने तुल्य गुण-कर्म और स्वभाव वाली हों।

अगले मंत्र में कहा गया है कि जैसे विद्वान् पुरुष मिथ्याचारी मूढ़ विद्यार्थी को नहीं पढ़ाते हैं। ऐसे ही स्त्री-पुरुष मिथ्या आचार-विचार और व्यभिचार आदि दोषों से दूर रहकर गृहस्थ आश्रम को श्रेष्ठ बनावें और परस्पर धन का आचरण करें।

अगले मंत्र में लोपामुद्रा शब्द भी पड़ा है।

नदस्य मा रुधतः काम आगन्नित आजातो अमुतः कुतश्चित्।
लोपामुद्रा वृषणं नी रिणाति धीरमधीरा धयति श्वसन्तम्।।४।।

पदार्थ- (इतः) इधर से अथवा (अमुतः) उधर से (कुतश्चित्)

कहीं से (अजातः) सब ओर से प्रसिद्ध (रूधतः) वीर्य रोकने वा (नदस्य) अव्यक्त शब्द करने वाले वृषभ आदि का (कामः) काम (मा) मुझको (आगत्) प्राप्त होता और (अधीरा) धैर्य से रहित वा (लोपामुद्रा) लोप हो जाना, छिप जाना ही प्रतीत का चिह्न है जिसका सो वह स्त्री (वृषणम्) वीर्यवान् (धीरम्) धैर्य्यवान् (श्वसन्तम्) श्वास लेते हुए पुरुष को (नीरिणाति) निरन्तर प्राप्त होती और (धयति) उससे गमन भी करती है।

भावार्थ- जो विद्या धैर्य आदि गुणों से रहित स्त्रियों से विवाह करते हैं वे कभी सुख नहीं पाते हैं। जो पुरुष काम रहित कन्या को अथवा काम रहित पुरुष को कुमारी विवाहे वहाँ कुछ भी सुख नहीं रहता है। इसलिये परस्पर प्रीति वाले गुणों में समान स्त्री पुरुष विवाह करें वहाँ ही मंगलमय वातावरण रहता है। अगले मंत्र में बताया गया है कि जो कुपथ्य आचरण करते हैं वे रोगों से जकड़े हुए ही रहते हैं।

अगले मंत्र में अगस्त्य नाम पड़ा है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अगस्त्य का अर्थ निरपराधियों में उत्तम किया है।

अगस्त्यः खनमानः खनित्रैः प्रजामपत्यं बलमिच्छमानः।
उभौ वर्णावृषिरुग्रः पुपोष सत्या देवेष्वाशिषो जगाम॥६॥

पदार्थ- जैसे (खनित्रैः) कुदाल, फावड़ा, कसी आदि खोदने के साधनों से भूमि को (खनमानः) खोदता हुआ कृषक धान्यादि अनाज पाकर सुखी होता है वैसे ब्रह्मचर्य और विद्या से (प्रजासु) राज्य (अपत्यम्) सन्तान और (बलम्) बल की (इच्छमानः) इच्छा करता हुआ (अगस्त्यः) निरपराधियों में उत्तम (ऋषि) वेदार्थ वेत्ता (उग्रः) तेजस्वी विद्वान् (पुपोष) पुष्ट होता है। (देवेषु) विद्वानों में (सत्याः) अच्छे कामों में उत्तम सत्य और (आशिषः) सिद्ध इच्छाओं को (जगाम) प्राप्त होता है वैसे (उभौ) दोनों (वर्णा) परस्पर एक दूसरे को स्वीकार करते हुए पति-पत्नी बनें।

ऋग्वेद के अतिरिक्त लोपामुद्रा यजुर्वेद अध्याय १७ के मंत्र ११ से १५ तक के मंत्रों की भी ऋषिका हैं। मंत्र संख्या ११ में न्यायाधीश कैसा होना चाहिये इस विषय पर विचार हुआ है-

नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्चिषे।
अन्यास्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवो भव॥

- यजु. १७/११

पदार्थ- हे सभापति महोदय। (हरसे) दुःख हरने वाले (ते) आपके लिये हमारा किया (नमः) सत्कार हो। (शोचिषे) पवित्र (अर्चिषे) सत्कार के योग्य (ते) आपके लिये हमारा कहा (नमः) नमस्कार (अस्तु) होवे। (ते) आपकी (हेतय) वज्रादि शस्त्रों से युक्त सेना है वे (अस्मत्) हम लोगों से (अन्यान्) अन्य शत्रुओं को (तपन्तु) दुःखी करें (पावकाः) शुद्धि करने वाले आप (अस्मभ्यम्) हमारे लिये (शिवः) कल्याणकारी (भव) होइए।

अगले मंत्र में बताया गया है कि मनुष्य किन देशों में सुखी रहता है-

नृषदे वेडप्सुषदे वेड् बर्हिषदे वेड् बनसदे वेट् स्वर्विद वेट्॥२॥

पदार्थ- हे सभापति। आप (नृषदे) नायकों में स्थिर पुरुष होने के लिए (वेड्) न्यायासन पर बैठने (अप्सुषदे) जलों के बीच नौकादि में स्थिर होने वाले के लिए (वेट्) न्यायगद्दी पर बैठने (बर्हिषदे) प्रजा को बढ़ाने वाले व्यवहार में स्थिर होने के लिए (वेट्) अधिष्ठाता होने (वनसदे) वनों में रहने वालों के लिए (वेट्) न्याय में प्रवेश करने और (स्वर्विदे) सुख को जानने वाले के लिए (वेट्) उत्साह में प्रवेश करने वाले हूजिए।

भावार्थ- जिस देश में न्यायाधीश, नौकाओं को चलाने वाले, प्रजा को बढ़ाने वाले, वन में रहने वाले, सेना के नायक और सुख पहुँचाने वाले विद्वान् होते हैं वही सब सुखों की वृद्धि होती है।

अगले मंत्र में बताया गया है कि इस संसार में अग्नि विद्या को छोड़ देने वाले संन्यासीगण मनुष्यों को वेदार्थ का ज्ञान दिया करें। फिर अगले मंत्र में योगियों के लिए कहा गया है-

ये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन्ये ब्रह्मणः पुर ऽएतारोऽअस्य।
येभ्यो नऽऋते पवते धाम किं चन न ते दिवो न पृथिव्याऽअधि स्नुषु॥

- यजु. १७/१४

पदार्थ- (ये) जो (देवाः) पूर्ण विद्वान् (देवेषु अधि) विद्वानों में सबसे उत्तम कक्षा में विराजमान (देवत्वम्) अपने गुण, कर्म और स्वभाव को (आयन्) प्राप्त होते हैं और (ये) जो (अस्य) इस (ब्रह्मणः) परमेश्वर को (पुरऽएतारः) पहिले प्राप्त होने वाले हैं (येभ्यः) जिनके (ऋते) बिना (किम् चन) कोई भी (धाम) सुख का साधन (न) नहीं (पवते) पवित्र होता है (ते) विद्वान् लोग (न) नहीं (दिवः) सूर्य लोक के प्रदेशों और (न) न (पृथिव्याः) पथ्वी के (अधि स्नुषु) किसी भाग में अधिक बसते हैं।

अब अग्नि मंत्र में राजा कैसे हो? यह विषय आया है।

प्राणदाऽअपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदा:।
अन्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतय: पावकोऽअस्मभ्य॑शिवो भव ll१५ll

पदार्थ- हे विद्वान् राजन्। (ते) आपकी जो उन्नति अथवा शस्त्रादि (अस्मभ्यम्) हम लोगों के लिए (प्राणदा:) जीवन तथा बल को देने वा (अपानदा:) दु:ख दूर करने के साधन को देने वा (व्यानदा:) व्याप्ति और विज्ञान को देने (वर्चोदा:) सब विद्याओं को पढ़ने का हेतु को देने और (वरिवोदा:) सत्यधर्म और विद्वानों की सेवा को प्राप्त कराने वाली (हेतय:) वज्रादि शस्त्रों की उन्नतियां (अस्मत्) हमसे (अन्याम्) अन्य दुष्ट शत्रुओं को (तपन्तु) दु:खी करें। और उनके सहित (पावक:) शुद्धि का प्रचार करते हुए आप हम लोगों के लिए (शिव:) कल्याणकारी (भव) हूजिए।

इस संक्षिप्त वर्णन में हमने देख लिया है कि लोपामुद्रा वेद विद्या में निष्णात् थीं। इतिशम्।

- ७३, शास्त्री नगर
दादागाड़ी, कोटा (राज.)

□□□

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य (मंत्री-न्यास) भंवरलाल गर्ग (कार्यालय मंत्री) डॉ.अमृत लाल तापड़िया (उपमंत्री-न्यास)

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश
अब ४००० रु. सैकड़ा
सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग अब
एक हजार प्रतियों के लिए १५००० रु.

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्यॉंमार) स्मृति पुरस्कार

''सत्यार्थ-भूषण'' पुरस्कार ₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थप्रकाश

अवश्य खरीदें।

कीमत मात्र ₹ ४५

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

४००० रु. सैंकड़ा शीघ्र मंगवाएँ

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - 313001

सर्वोपरि सत्ता

सुश्री कञ्चन आर्या

प्रिय बच्चो,
आशा है तुम्हारी पढ़ाई और अन्य दिनचर्या ठीक चल रही होगी। बच्चो, मैं पत्रों में और आपसे बातचीत करते समय प्रायः ईश्वर के बारे में चर्चा करती रहती हूँ। ईश्वर की उपासना, ध्यान आदि करने के लिए भी कहती रहती हूँ। परन्तु मेरे मन में एक शंका उठ रही है कि आपको ईश्वर की सत्ता पर विश्वास है भी या नहीं? जब आप छोटे थे, तब हमारी अनेक बार ईश्वर के विषय में चर्चा होती रहती थी। न जाने बचपन की वे बातें तुम्हें याद हैं या भूल गये हो? यह भी हो सकता है कि मित्रों के साथ रहते हुए, उनसे प्रभावित होकर आप ईश्वर को एक कल्पना ही समझते रहो। आओ, इस पत्र में इसी विषय पर चर्चा करते हैं कि ईश्वर नाम की कोई सर्वोपरि सत्ता है भी या नहीं?

विदुषी लेखिका ने पत्राचार शैली में अनेक जटिल विषयों को सरल रूप में प्रस्तुत किया है। उनमें से एक पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत है। - सम्पादक

मेरे बच्चो! अनेक बार बहुत सारी बातों को हम केवल इसलिए मान लेते हैं कि परिवार और आसपास के लोग उन्हें मानते हैं। उनके प्रभाव में आकर हम स्वतंत्र रूप से कुछ सोच विचार नहीं करते। जैसा वे कहते हैं वैसा ही मानते और करते चले जाते हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए। हमें स्वतंत्र रूप से इस विषय पर तर्कपूर्वक चिन्तन करके ठीक निर्णय को अपने मन में बिठा लेना चाहिए। फिर उसके असली स्वरूप के बारे में जानकर उसके अनुसार ही अन्य कार्य करने चाहिए। इससे व्यक्ति का हर परिस्थिति में विश्वास दृढ़ बना रहता है और वह कभी डगमगाता नहीं।

बच्चो! संसार में आपको जो पदार्थ और वस्तुएँ दिखाई देती हैं या आपके अनुभव में आती हैं उनकी सत्ता को तो आप आराम से स्वीकार कर लेते हैं। उन वस्तुओं के स्वरूप को भी आप अच्छी तरह जान और समझ लेते हैं। परन्तु जो पदार्थ आपको दिखाई ही नहीं देते अथवा आपके अनुभव में भी नहीं आते, उनको मानने और समझने में आपको अवश्य कठिनाई हो सकती है। ऐसे विषयों में ही अनेक प्रकार की भ्रान्तियाँ और पाखण्ड भी फैल जाते हैं। ईश्वर भी एक इसी प्रकार की सत्ता है। अतः हमें तर्क और युक्ति से ही ईश्वर की सत्ता के बारे में विचार करना चाहिए। पत्र सं. २ में मैंने मृत शरीर के प्रसंग में आत्मा की सत्ता के साथ-साथ ईश्वर या परमात्मा के बारे में भी संकेत से उल्लेख किया था। ईश्वर, परमात्मा, परमेश्वर, सच्चिदानन्द, शिव, ब्रह्मा, गॉड, अल्लाह आदि अनेक नाम उसी सत्ता के लिए प्रयोग में आते हैं। चर्चा के समय हम किसी भी नाम का प्रयोग कर सकते हैं।

आप यह अच्छी तरह जानते हैं कि जब कोई पदार्थ प्रत्यक्ष रूप से दिखाई नहीं देता तो हम अनुमान द्वारा या दूसरे साधनों से भी उसके बारे में जान सकते हैं। जैसे तुम अपने कॉलेज में पढ़ने के लिए गए हुए थे। वापस आये तो आपने देखा कि आपकी मेज पर एक बड़ा सा चार्ट रखा हुआ था, जिस पर एक सुन्दर रंगीन चित्र बना हुआ था। देखते ही आपकी दृष्टि उस पर टिक गई और आप सोचने लगे कि अहा कितना सुन्दर चित्र है। अवश्य कोई बहुत अच्छा कलाकार होगा जिसने यह बनाया है। आपके मित्र के वापस आने पर आपने उससे पूछा कि क्या वह चित्र उसने बनाया है? उसने उत्तर दिया कि नहीं, मैंने तो नहीं बनाया। तब आप सोच में पड़ गए कि कमरे में कौन सा चित्रकार आया होगा जो इतना सुन्दर चित्र बनाकर रख गया? उस समय यदि आपका मित्र यह कहे कि तुम क्या सोच में पड़ गए हो? यह चित्र तो किसी ने भी नहीं बनाया। यहाँ ये सब रंग, ब्रुश आदि पड़े थे उनसे यह चित्र अपने आप ही बन गया है। तब आप क्या उत्तर दोगे? यही न कि तुम पागल हो गए हो?

क्या अपने आप भी कभी चित्र बन सकता है? ये रंग, ब्रुश आदि तो सभी जड़ हैं, हिल डुल नहीं सकते। किसी भी हालत में चित्र का अपने आप बनना तो संभव नहीं है। कोई न कोई चेतन मनुष्य जो कलाकारी भी जानता है, अवश्य वही इसे बना सकता है। मान लो, रंग की शीशियाँ स्वयं खुलकर गिर भी गई होतीं तो भी ऐसा सुन्दर चित्र नहीं बन सकता था। तब तो वे रंग ही आपस में घुल मिल जाते। और उन शीशियों को गिराने वाला भी तो कोई जानदार प्राणी ही होता। **इस प्रकार आप चित्र को देखकर निश्चयपूर्वक कह सकते हैं कि इस चित्र को बनाने वाला**

कोई न कोई चित्रकार तो अवश्य ही है। इसे अनुमान द्वारा जानते हैं।

ठीक इसी प्रकार इस संसार को देखकर भी हमें यह सोचने को विवश होना पड़ता है कि इसे बनाने वाला कोई न कोई तो अवश्य होगा। यदि कोई कहे कि नहीं, यह अपने आप ही बन गया है तो यह बात उसी तरह असंभव है जिस प्रकार चित्र का अपने आप बनना। बच्चो, इस निश्चित नियम को सदा याद रखें कि जहाँ भी कोई रचना या गुण पाये जाते हैं वहाँ उसका कर्त्ता, रचयिता या गुणी भी अवश्य होगा। बिना किसी चेतन कर्त्ता के किसी भी कार्य का होना असंभव है।

इस संसार में बहुत कुछ वस्तुएँ तो हम जैसे मनुष्यों द्वारा बनाई जाती हैं। उन सबको आप जानते ही हैं। मोटे तौर पर मकान, गाड़ियाँ, मशीनें, वायुयान, वस्त्र, बर्तन, टेलीविजन आदि आदि अनगिनत वस्तुएँ इंसान बना सकता है और बनाता भी है। यदि कोई कहे कि नहीं, ये सब तो अपने आप बन गई हैं तो आप कभी भी इससे सहमत नहीं हो सकते। यहाँ यह तथ्य विचारणीय है कि जिन पदार्थों जैसे लोहा, मिट्टी, पानी, अनाज, पेड़ पौधे आदि से ये सब वस्तुएँ बनाई जाती हैं, उन्हें तथा जिन पृथ्वी, आग, हवा, सूर्य, चाँद, अनगिनत ग्रह, उपग्रह आदि लोक लोकान्तरों के आश्रय मनुष्य जीवित रहता है उनको वह स्वयं नहीं बना सकता। प्रश्न उठता है कि उन्हें किसने बनाया होगा? आप भी जानते हैं कि किसी इंसान में सामर्थ्य नहीं, जो किसी पेड़ के एक पत्ते को भी उसी रूप में बनाकर दिखा दे। यहाँ तक कि करोड़ों वैज्ञानिक मिलकर भी एक गेहूँ के दाने को नहीं बना सकते। वे इन सब बने हुए पदार्थों का विश्लेषण तो कर सकते हैं कि उनमें किन किन अणु-परमाणुओं का और कितने अनुपात में मिश्रण है परन्तु उन परमाणुओं को न तो बना सकते हैं और न उस रूप में मिला सकते हैं। हम गेहूँ के दाने को भूमि में बो तो सकते हैं परन्तु उसी समय उसमें से पौधा बनाकर गेहूँ नहीं लगा सकते।

बच्चो, आप अपने शरीर को ही देख लो। आपने कभी सोचा कि आप खाते क्या हैं और उसका बनता क्या है? आप और हम जो भी कुछ खाते हैं, अच्छा या बुरा, उससे ही रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, वीर्य बनते हैं और व्यर्थ का अंश मल और मूत्र के रूप में बाहर निकल जाता है। क्या किसी मनुष्य या उसकी बनाई हुई मशीन में ऐसा सामर्थ्य है जो इस कार्य को कर सके? यह कार्य तो कोई अदृश्य सत्ता ही कर रही है। एक दूसरा उदाहरण लेते हैं। डॉक्टर लोग बताते हैं कि सेब, अनार आदि खाने से शरीर में रक्त बनता है। आप ही बताओ क्या संसार में कोई ऐसी मशीन या वैज्ञानिक है जो सेब या अनार में से रक्त की एक बूँद बनाकर दिखा दे? केवल शरीर की मशीनरी में ही तो यह व्यवस्था है। किसने बनाया यह शरीर? और यह सब सुन्दर व्यवस्था कौन कर रहा है? क्या कोई जानता है कि वह कौन सा मसाला है जिससे हमारे शरीर की त्वचा बनी है। अच्छा, एक चींटी को ही देखो। कैसे उसका शरीर तीन भागों में बँटा हुआ है। इतनी बारीक सूक्ष्म टाँगें, किसने और कैसे बनाईं? ये अनगिनत सौर मंडल कहाँ समाये हैं और कैसे बन रहे हैं? सूर्य, पृथ्वी, चन्द्रमा आदि विविध ग्रह नक्षत्रों की निश्चित और व्यवस्थित गति कैसे और किसने निर्धारित की है ? ये सब कभी आपस में टकराते नहीं। कैसे दिन और रात निर्धारित रूप से बन रहे हैं? जरा

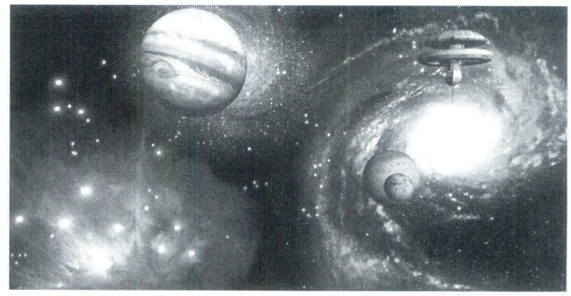

ब्रह्माण्ड की ओर नजर डालो यह सब सुन्दर व्यवस्था कौन बनाए हुए है? मनुष्य एवं अन्य जीव जन्तुओं की प्रजनन प्रक्रिया सारे संसार में एक सी कैसे चल रही है? बच्चो! क्या आपने इन बातों पर ध्यान से विचार किया है? विचार करते करते दिमाग चकरा जाता है। इसके विपरीत अपने आप बनने वाले पदार्थों से सब जगह इस प्रकार की एक ही व्यवस्था नहीं देखी जाती। इस तरह के अनेक उदाहरण आपको अपने आसपास मिल जायेंगे। ये तो मैंने आपको समझाने के लिए केवल थोड़े से उदाहरण बताये हैं।

अब दूसरे पक्ष पर विचार करते हैं। मनुष्य जीवन की ओर देखो। कोई है संसार में जो चाहता हो कि युवावस्था समाप्त हो जाए, मैं बूढ़ा हो जाऊँ और मौत आ जाए। कोई स्वयं नहीं चाहता और न ही कर रहा है। कौन कर रहा है यह सब? हम मनुष्य या कोई वैज्ञानिक यह सब कर नहीं सकते, पर सब हो रहा है। कोई तो ऐसी चेतन शक्ति है जो यह सब नियंत्रण कर रही है। जैसे एक छोटा सा चित्र अपने आप नहीं बन सकता कोई कलाकार ही उसको बना सकता है उसी प्रकार **यह अद्भुत संसार भी कोई अद्भुत कलाकार ही बना सकता है। उसको ही हम ईश्वर, परमात्मा, परमेश्वर आदि नामों से पुकारते हैं।**

अच्छा, शांत मन से इन सब बातों को सोचकर बतायें कि आपको व आपके मित्रों को ईश्वर की सत्ता में विश्वास हुआ या नहीं?

आपकी माता।

पता- ई-३२, अमर कॉलोनी
लाजपत नगर-४
नई दिल्ली- २४

❑❑❑

(साभार- क्या है आपके जीवन की सच्चाई)

योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः

संध्योपासना के मंत्रों के चयन में अथर्ववेद के छः मंत्रों का चयन किया गया है। इन मंत्रों का शीर्षक 'मनसा परिक्रमा' दिया गया है। प्रत्येक मंत्र की अंतिम शब्दावली- **योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः** है। अर्थ है- मन में इन मंत्रों की परिक्रमा कीजिये और द्वेष वाले दुर्गुण के पराभव की एक बार नहीं छः बार प्रार्थना कीजिए। निरन्तर छः मंत्रों में, द्वेष को परमेश्वर के न्यायकारी जबड़े में रखने के लिये साधक को वचनबद्ध किया गया है। श्रेय मार्ग के पथिक के लिये काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर छः शत्रु बताए गए हैं। मत्सर इनमें अंतिम शत्रु है। परन्तु जान पड़ता है, अथर्ववेद इन पाँच शत्रुओं से भी इस शत्रु- मत्सर को सर्वोपरि रखता है। कारण समझना होगा। मस्तिष्क में यह बात स्तुति, प्रार्थना और उपासना मंत्रों के गहन आलोड़न में उठी और बलवती होती चली गई।

मंत्र की अंतिम पदावली का सरल, सीधी सपाट भाषा में अर्थ है **कि जो व्यक्ति हमसे द्वेष करता है अथवा जिससे हम द्वेष करते हैं, उसे परमात्मा के न्यायरूपी जबड़े (सामर्थ्य) में रखते हैं।** जबड़ा शब्द महत्वपूर्ण है। दांत से चबाने पर अन्न का कुछ अंश, बिना चबे भी उदरस्थ हो जाता है पर जबड़े से चबाने पर चूर चूर होकर ही आगे पहुँचता है। इसी प्रकार परमेश्वर के न्याय के समक्ष, किसी के बच जाने, चाहे पतली गली से निकल जाने की गुंजाइश ही नहीं है चाहे वह कितना ही सामर्थ्यवान, विद्वान् व संन्यासी क्यों न हो? प्रश्न उठता है कि क्या महर्षि स्वयं भी, अपने आपको इस वचनबद्धता में सम्मिलित करते हैं या केवल आराधकों के लिये ही इन मंत्रों का संकलन किया है? वे लोग भूल करेंगे जो यह मानेंगे कि महर्षि इस वचनबद्धता में अपने को सम्मिलित नहीं करते हैं। 'दुरितानि' के पराभव की प्रार्थना में और जुहराणमेनो से- पाप से बचाने की प्रार्थना में महर्षि स्वयं को सम्मिलित करते हैं। स्तुति प्रार्थना और उपासना के मंत्रों में उनकी भागीदारी हमारी, आपकी तरह ही है। महर्षि विस्मरण कर ही नहीं सकते थे कि वह अल्पज्ञ, अल्प सामर्थ्यवान जीवात्मा हैं। सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान केवल परमात्मा ही है।

रामकृष्ण परमहंस ने महर्षि दयानन्द से प्रश्न किया कि क्या वे ईश्वरोपासना करते हैं? महर्षि का उत्तर हाँ में सुनकर पुनः पूछा क्यों करते हो? महर्षि ने उत्तर दिया कि स्वयं को माँजने के लिये। परमहंस ने कहा जो स्वयं स्वर्णपात्र हो? महर्षि मौन हो गए। समझ गए- यह 'अहम् ब्रह्मास्मि' का भ्रम पाले हुए हैं। वार्तालाप समाप्त।

जिस व्यक्ति के प्राणहरण की सत्रह बार चेष्टा की गई हो, जिसे सीधे ब्रह्मचर्य आश्रम से संन्यासाश्रम की चौथी सीढ़ी पर पहुँचा हुआ संन्यासी होने के कारण सन्ध्योपासना अनिवार्य नहीं है, वही व्यक्ति अपने आपको प्रतिदिन माँजता है। मनसा परिक्रमा करके **योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं, द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः**। श्रेयमार्ग में अवरोध उत्पन्न करने वाले छः शत्रुओं काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर में से प्रथम पाँच पर तो महर्षि विजय प्राप्त कर चुके थे। छठे शत्रु मत्सर- द्वेष के बारे में सोच विचार करने का, अंतिम निर्णय करने, निश्चयात्मक रूप से कहने का अधिकार, जीवात्मा के पास नहीं है। जानबूझ कर किये गये द्वेष को जीवात्मा जान सकता है, पर अज्ञात रूप से किये गये द्वेष को तो परमात्मा ही जानता है क्योंकि द्वेष का आयाम बहुत विशाल है। अथर्ववेद में ही जब इस दुर्गुण ग्रस्त मानव के हो जाने की पूरी-पूरी सम्भावना व्यक्त की गयी है तभी तो उसके निवारणार्थ परमात्मा की न्याय व्यवस्था में अपने आपको सौंपना ही उपाय बताया है। कोई विकल्प जीवात्मा के पास नहीं है। महर्षि दयानन्द इसीलिये अपने आपको प्रतिदिन परमात्मा के न्यायरूपी सामर्थ्य-जबड़े में रखते थे।

काशी शास्त्रार्थ १८६९ से लेकर १८८३ अंतिम विष प्रयोग तक महर्षि दयानन्द के १७ बार प्राणहरण के प्रयास किए गये।

महर्षि बारम्बार अपने आपसे पूछते होंगे- ईश्वर के सच्चे स्वरूप को बता कर, उसकी स्तुति, प्रार्थना और उपासना की वेद सम्मत विधि बता कर, अंध विश्वासों, धर्म ढ़कोसलों का पर्दाफाश कर, क्या कोई बुरा काम कर रहे हैं, जिसके लिये निरन्तर उनके प्राणहरण की चेष्टा की जा रही हैं। दूसरा विचार तत्काल कौंधा होगा। नहीं, मैं कुछ अपराध किसी के प्रति नहीं कर रहा हूँ। मैं तो गुरु विरजानन्द जी महाराज के बताए और उस सम्बन्ध में पूर्णतया आश्वस्त होने पर ही सत्य मत, सत्य धर्म, वेद का प्रचार, जन कल्याण की भावना से कर रहा हूँ, फिर क्यों मुझे, मेरे शरीर को, समाप्त करने के निरन्तर

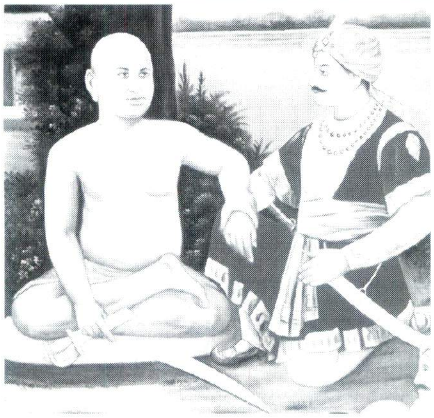

प्रयास किए जा रहे हैं? सम्भवतः इसलिये कि ईश्वर की अवधारणा, निराकार, सर्वव्यापक ईश्वर का प्रचार प्रसार सफल होने पर उनकी मौज मस्ती, हलुए-मांडे की आजन्म व्यवस्था, भोली भाली जनता के मन-मस्तिष्क पर अधिकार की अदम्य कामना पर चोट पहुँचेगी। पूजा-पाठ की यथाविधि रखनी होगी- काशी नरेश ईश्वरनारायण सिंह जी को भी धर्मधुरीणों ने समझा कर पूर्णतः आश्वस्त कर दिया था। शास्त्रार्थ में दयानन्द की पराजय के बिना धर्म नहीं बचेगा।

महर्षि की सोच को विराम मिला। स्वार्थी और नासमझ वे लोग हैं जो घोर स्वार्थवश उनके प्राणहरण की चेष्टा कर रहे हैं। नासमझों पर क्या क्रोध? उनसे कैसा द्वेष? ऋषित्व की ओर अग्रसर होते हुए स्वामी दयानन्द सरस्वती यही सोच कर अपने आपको संतोष दे लेते होंगें। फिर भी मन के किसी अज्ञात कोने में, पूर्व जन्मों के संस्कारवश, पड़ी हुई धूल झाड़ कर, मांज भी लेते थे। यह कार्य अंतिम समय तक चला। पं. भीमसेन प्रमुख लेखक ने जो महर्षि की संस्कृत व्याख्या को हिन्दी में अनुवाद करते थे, लिखा है अंतिम समय से कुछ पूर्व तक महर्षि दयानन्द 'अग्ने नये सुपथा' मंत्र का पाठ करते थे।

अब आइए सामान्य मानवों के संसार में- मत्सर शब्द संस्कृत भाषा का है। हिन्दी शब्द कोष में इसके अर्थ- किसी का वैभव या सुख न देख सकना, ईर्ष्या, डाह, जलन, क्रोध दिए हैं। ईर्ष्या, डाह, जलन और क्रोध आदि समानार्थी हैं तो अपनी बात समझाने के लिये एक-दूसरे का प्रयोग किया जा सकता है। शाब्दिक छीछालेदर का काम विद्वानों पर छोड़ता हूँ।

मैं जिस परिसर में रहता हूँ, वह मुगलकालीन मुल्लाजी की सराय को २४ क्वार्टरों में परिवर्तित कर बनाया गया है। आकृति सराय जैसी चौकोर ही रखी गई है। सब परिवार एक दूसरे को जानते हैं एक जमाने में वातावरण परिवार का ही था। युवा वर्ग भाई-बहन बजुर्ग चाचा ताऊ सर्वमान्य थे। 'लव' का तत्व कल्पना में भी नहीं था। बात अब बदल गई है। १९५९ से ए.जी.ऑफिस में कार्य के १२ वर्ष पश्चात् सैकण्ड हैन्ड लेम्ब्रेटा स्कूटर खरीदा था। परिसर के सबसे अधिक वाचाल महापुरुष ने पान की पीक थूक कर कहा बेटा! स्कूटर तो मैं भी अपने बच्चों को दिला सकता हूँ, पर इसलिये नहीं दिलाता कि ये फिर टायलेट जाएँगे तो भी स्कूटर पर ही जायेंगे। यही महानुभाव जब इनका सुपुत्र दो वर्ष तक हाईस्कूल नहीं पास कर पाया तो कहा करते थे तुम क्या जानो एलजेब्रा क्या होता है, ज्योमेट्री क्या होती है? ए स्क्वायर, बी ए स्क्वायर करते मर जाओगे पर पल्ले फिर भी नही पड़ेगी। मैं उस समय सम्भवतः पाचवीं कक्षा का छात्र था। जब मैं प्रथम प्रयत्न में ही हाई स्कूल द्वितीय श्रेणी से पास हुआ तो कुछ लोगों ने अत्यधिक प्रसन्नता व्यक्त की, गोद में उठा लिया और कुछ जल-भुन कर राख हो गये। जब मेरे कनिष्ठ भ्राता लव कुमार ने प्रान्त भर में सर्व द्वितीय स्थान पाया तो मुहल्ले के लोगों की समझ में ही नही आया कि सर्व द्वितीय कौनसी श्रेणी है। उनके लिए प्रथम श्रेणी ही अन्तिम श्रेणी थी। जब मेरी भानजी सुषमा हायर सेकेण्डरी परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई तो कहा गया- ये लोग 'जुगाड़' लगा लेते हैं। सुपुत्री मनीषा के प्रथम श्रेणी में हायर सेकेण्डरी पास करने तक जमाना बदल गया था।

ईर्ष्या जलन की आग किसी को नहीं छोड़ती। अपने-पराए में, सम्बन्धों की निकटता में, किसी का भी ख्याल नहीं करती। तुम्हारा पुत्र विदेश पढ़ने गया है। तुम लोग पहले भी सपरिवार विदेश घूम आये हो। अब यूरोप भी घूम लोगे और हम.......। यह सम्वाद पिता पुत्र का है।

तुम दोनों तो सरकारी पेंशनर हो। पेंशन बढ़ती ही है, घटती नहीं। हमारी तो बैंकों से प्राप्त ब्याज की आमदनी है जो घटती ज्यादा है बढ़ती कम है। इसी सम्वाद का अगला अंश- भाभी समझदार हैं, सलीके से रहती हैं और यह.............. (अपशब्दों की भरमार) कहते हुये भूल जाते हैं कि जिससे कह रहे हैं, उसकी सगी बहन उसकी पत्नी है।

अग्रज ने कहा- तुम खाली बैठे हुये हो। समय कैसे काटते होगे? मैं तो फैक्टरी जाता हूँ। दिन भर काम देखता हूँ। मेरे पास तो समय ही नहीं है। मैंने निवेदन किया कि मैं दयानन्द का कर्ज उतार रहा हूँ। उसी के चिन्तन-मनन में मग्न रहता हूँ। कोई विषय सूझने पर लेख लिखता हूँ। इसको वे निठल्लापन समझते हैं। मेरे लेखन कार्य को भी बकवास समझते हैं क्योंकि उससे कोई अर्थोपार्जन नहीं होता। केवल समय नष्ट होता है। 'लक्ष्मी के पीछे भागने वालों की यही सोच होती है। मेरा एक परम हितैषी मित्र भी कहता है- स्वास्थ्य की कीमत पर लेखन कार्य का कोई औचित्य नहीं है। फिर तुम्हारे पढ़ने-लिखने से तो कोई दुनिया नही बदल जावेगी। महर्षि कहते हैं किसी की मत सुनो। तुम मेरे कर्जदार हो। कर्ज चुकाने के लिये तुम वचनबद्ध हो। स्मरण हो आया मैने एक लेख में ऐसा ही कुछ लिखा था।

मैने सुपुत्र अमित के बीएस.सी (मैथ्स) में उत्तीर्ण करते ही एक वर्ष बचाने और, ग्वालियर विश्वविद्यालय की अपेक्षा भारत की सिलिकोन वैली के बेंगलुरू में उत्तम शिक्षा कि लिये प्रख्यात आर.वी. कालेज ऑफ इन्जीनियरिंग में, डोनेशन कोटा में

प्रवेश करा दिया। एक अत्यन्त परिचित श्रीमती जी ने प्रतिक्रिया दी हमारे बच्चे तो बिना डोनेशन पढ़े हैं। जब उनका एक सुपुत्र सर्टिफिकेट/डिप्लोमा कोर्स कम्प्यूटर साइंस में पास कर कॉल सेन्टर में लग गया तो वह शेखी बघारती थीं कि वह अमेरिकन बैंक में है। रात में भी काम करना पड़ता है। अमित एम.ए.सी. में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ। दस वर्ष से भी ज्यादा समय से कैलीफोर्निया, यूएसए की सिलिकौन वैली में कार्यरत है। दो वर्ष पूर्व घर भी खरीद लिया है। अमित के अमेरिका पहुँच जाने के बाद उनके दिल पर क्या गुजरी होगी वही जानती होंगी या उनका परमात्मा।

मेरे दामाद श्री देवेन्द्र कपूर की जब दिल्ली में पदस्थापना हुई तो उन्होंने नई मारुति ८०० बेचकर फोर्ड आईकोन कार खरीद ली। कारण पूछने पर बताया कि दिल्ली में मारुति वालों को हीन दृष्टि से देखा जाता है। टटपूंजिए, यतीम समझा जाता है। एक से एक महंगी कार, आलीशान कोठी खरीदने, बनवाने की होड़ लगी हुई है। परिवार में प्रत्येक व्यक्ति की, वृद्ध माँ-बाप आदि साथ रहते हों, गाड़ी मकान अलग होना चाहिये। यह स्टेटस सिम्बल या शान शौकत का दिखावा ईर्ष्या, द्वेष का ही तो परिणाम है। आर्य जगत् के सबसे उत्कृष्ट मासिक आर्यसंसार की स्थापना से ही अवैतनिक सम्पादक रहे स्मृतिशेष वैदिक विद्वान् प्राध्यापक उमाकान्त उपाध्याय जी से, दूरभाष वार्तालाप के मध्य मैंने कहा कि लेख में एक सामान्य सी त्रुटि के लिये एक दिग्गज स्थापित एवं अत्यन्त प्रतिष्ठित विद्वान् ने आर्यसंसार में ही लेख लिखकर प्रतिक्रिया दी और पुनः सम्पर्क करने पर धो डाला। श्रद्धेय उपाध्याय जी का उत्तर था कि ईर्ष्या, द्वेष विद्वानों में सबसे ज्यादा होता है। विषय को जिस प्रकार मैंने समझा, चिन्तन मनन में दस दिन के लगभग ५०-६० घंटे श्रम किया तो इतने पृष्ठ तो मुझे रंगने ही थे। समापन करते हुए यही कहना चाहूँगा कि अस्सी वर्ष के दीर्घकालीन जीवन में, अथर्ववेद के इन छः मंत्रों की अन्तिम वाक्यावली के समर्थन में अनुभूत सत्यों को शाब्दिक आवरण नहीं पहिनाता तो विषय के साथ न्याय नहीं होता, द्वेष का सत्य जैसे सुना, समझा वैसा ही अंकित किया है।

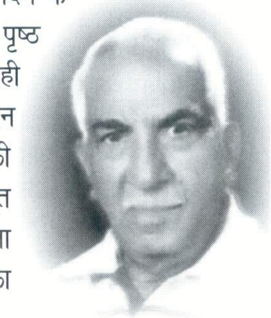

- अभिमन्यु कुमार खुल्लर
२२, नगर निगम क्वार्टर
जीवाजीगंज, लश्कर
ग्वालियर- ४७४००१ (म.प्र.)
दूरभाष- ०७५१-२४२५९३१

❑❑❑

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०७/१७

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (षष्ठ समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	यु		२	ति	२	स्त्र २		३ मू	३
	४	म्प	४		५ न्या	५		श ५	
६	जो ६		य ६		७	न ७		८	क्ष ८

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जो राजा सबको प्राणवत् प्रिय और हृदय की बात जानने हारा है उसे क्या उपमा दी गयी है?

२. किसके अनुरूप चलने वाला राजा न्यायरूपी दण्ड को चलाने में समर्थ होता है?

३. किस प्रकार के मनुष्यों के अनुवर्ती होने से सैकड़ों प्रकार के पाप लग जाते हैं ?

४. कैसा न्यायाधीश राजा दण्ड से मारा जाता है?

५. जो सब विद्याओं में पूर्ण विद्वान् हो वह राज्य व्यवस्था में किस विभाग का मुख्य होने योग्य है?

६. दण्ड का स्वरूप कैसा हो?

७. न्यूनातिन्यून कितने विद्वानों की सभा द्वारा दी गयी व्यवस्था को 'धर्म' कह उसका उल्लंघन न करने की बात कही गयी है?

८. चौपड़ खेलने को क्या कहा गया है?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०५/१७ का सही उत्तर	
१. सर्वत्र	२. वानप्रस्थ
३. नरकगामी	४. उन्नति
५. लक्षण	६. स्वार्थश्रमी

भूल सुधार- पूर्व में ४/१७ के उत्तर की जगह ५/१७ का उत्तर छप गया था।

''विस्तृत नियम पृष्ठ २० पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ अगस्त २०१७

समाचार

गुरुकुल प्रभात आश्रम में सौप्रस्थानिक समारोह

१० जून को गुरुकुल में नौ ब्रह्मचारियों का सौप्रस्थानिक समारोह आयोजित किया गया। समारोह का आरम्भ राष्ट्रीय मन्त्रपाठ के साथ हुआ। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने गुरुकुल गीतिका का गान किया। इसके पश्चात् नव स्नातकों ने अर्चन-वन्दन किया। आयोजन की अध्यक्षता गुरुकुल के कुलपति पूज्य श्री स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी ने की। उन्होंने कहा- ''गुरुकुल में रहते हुए ब्रह्मचारियों ने इन दस वर्षों में ज्ञान के अर्जन की योग्यता को ही अर्जित किया है। विद्या का अपार क्षेत्र अभी भी उनके लिए अज्ञात ही है।'' उन्होंने गुरुकुल से स्नातक हुए ब्रह्मचारियों को ज्ञान-पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि- 'उन्हें जीवन में अपने धर्म एवं स्वसंस्कृति के प्रति जागरूक रहते हुए लक्ष्य की ओर बढ़ना चाहिए।' समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में आर्यसमाज थापरनगर मेरठ के प्रधान श्री राजेश सेठी उपस्थित थे, गुरुकुल के वरिष्ठ स्नातक आचार्य यशपाल जी ने ब्रह्मचारी प्रभात, सर्वेश, देवेश, दिव्यांशु, अमित, आकाश, हर्षित, हेमन्त, अंकित को शपथपूर्वक स्नातक परिषद् में प्रवेश कराया।

बौद्धिक ज्ञान लिखित प्रतियोगिता सम्पन्न

गाँधीनगर विकास समिति एवं अम्बेडकर खेल संघ, उदयपुर द्वारा वैदिक संस्कृति पर आधारित प्रतियोगिता प्रतिवर्ष आयोजित की जाती है। जिसका उद्देश्य छात्र-छात्राओं के मध्य वैदिक मूल्यों का सम्प्रेषण होता है। इस वर्ष यह प्रतियागिता १४ अप्रैल २०१७ को लिखित रूप में आयोजित की गई। प्रतियोगिता के संयोजक श्री विनोद राठौड़ ने बताया कि प्रतियोगिता में ३५० बालक/बालिकाओं ने भाग लिया। जिसमें वरिष्ठ वर्ग (बालक) में श्री भरत कुमार मेघवाल, जयप्रकाश बालोत और राजेश परमार ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया। वरिष्ठ वर्ग (बालिका) में सुश्री तुलसी औदिच्य, तारा औदिच्य और अंजना चंदेला ने क्रमशः प्रथम द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार कनिष्ठ वर्ग (बालिका) में सुश्री खुशी गूर्जर, मुस्कान गूर्जर और गिरिजा गमेती ने क्रमशः प्रथम द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहीं कनिष्ठ वर्ग (बालक) में अनिल गमेती, पवन कुमार एवं कृष्ण कुंवर ने क्रमशः प्रथम द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया। इन सभी बालक बालिकाओं को संघ द्वारा उदयपुर भ्रमण करवाया गया और सिटी पैलेस दर्शन के दौरान महाराज कुमार श्री लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ से मिलवाया गया। वहीं न्यास द्वारा उपरोक्त विजेताओं को एक समारोह में पुरस्कार प्रदान किए गए। ये पुरस्कार उदयपुर नगर निगम के उपमहापौर श्री लोकेश द्विवेदी के करकमलों द्वारा वितरित किए गए। श्री द्विवेदी ने वैदिक संस्कृति की जानकारी बालक/बालिकाओं को हो, इस निमित्त इस आयोजन की भूरिशः प्रशंसा की।

- सुरेश चन्द्र पाटोदी, व्यवस्थापक-न्यास

चिकित्सा एवं जाँच शिविर

दिनांक ६ जून २०१७ को जिला अभिभाषक संघ सभागार न्यायालय परिसर, अलवर में मल्टी स्पेशिलिटी चिकित्सा एवं जाँच शिविर का आयोजन प्रातः १० से १२:३० बजे तक श्री छोटू सिंह आर्य धर्मार्थ हॉस्पीटल के सहयोग से किया गया।

शिविर का उद्घाटन श्री देवेन्द्र सिंह नागर, अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश न. २ अलवर द्वारा किया गया। क्योरवेल डाइग्नोस्टिक सेन्टर की ओर से रियायती दरों पर विभिन्न रोगों की जाँच की गई।

- प्रदीप कुमार आर्य, प्रधान

चुनाव समाचार

आर्य समाज विज्ञाननगर, कोटा के वार्षिक चुनाव सम्पन्न

२१ मई २०१७ को आर्य समाज विज्ञाननगर के वार्षिक चुनाव, चुनाव अधिकारी आचार्य अग्निमित्र शास्त्री, सह चुनाव अधिकारी उमेश कुर्मी की देखरेख में सम्पन्न हुए।

चुनाव में सर्वसम्मति से अर्जुनदेव चढ्डा को प्रधान, सुनील दुबे को मंत्री व महेन्द्रपाल शर्मा को कोषाध्यक्ष निर्वाचित किया गया। चुनाव में उपरोक्त के अतिरिक्त १२ सदस्यों को पदाधिकारी व अन्तरंग सदस्य भी सर्वसम्मति से चुना गया।

इस अवसर पर जिलासभा के मंत्री कैलाश बाहेती पर्यवेक्षक के रूप में उपस्थित थे।

भच्छी आर्यसमाज का पुनर्गठन

प्रधान डॉ. अमरेन्द्र कुमार, उपप्रधान श्री इन्द्रनारायण ठाकुर, श्री उपेन्द्र प्रसाद मंडल, मंत्री श्री रामदेव यादव, उपमंत्री श्री धर्मेन्द्र यादव, श्री रणजीत कुमार लाल ,कोषाध्यक्ष श्री रमाकान्त यादव, आर्य वीर दल अधिष्ठाता श्री जयानन्द प्रसाद, महिला आर्यसमाज प्रधाना श्रीमती सुनीता देवी, मंत्री श्रीमती श्वेता सुमन, कोषाध्यक्ष श्रीमती रानी कुमारी, आर्य वीरांगना दल पूनम कुमारी एवं पूजा कुमारी।

- आचार्य सुशील मिश्र, आर्ष गुरुकुल, मधुबनी (बिहार)

आर्य समाज, तलवंडी, कोटा के चुनाव सम्पन्न

१४ मई २०१७ को आर्य समाज, तलवंडी, कोटा के चुनाव चुनाव श्री कैलाश चन्द्र बाहेती (मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, कोटा) के निर्देशन में चुनाव अधिकारी श्री ओमप्रकाश तापड़िया एवं सह चुनाव अधिकारी शोभाराम आर्य की देखरेख में सम्पन्न हुए।

चुनाव में सर्वसम्मति से श्रीमती सुमन बाला सक्सेना को प्रधान, श्री मूलचन्द आर्य को मंत्री व श्री शिवदयाल गुप्ता को कोषाध्यक्ष निर्वाचित किया गया।

- मूलचन्द आर्य, मंत्री

जिला उप प्रतिनिधि सभा, नागौर के चुनाव सम्पन्न

२८ मार्च २०१७ को कुचेरा आर्य समाज के शताब्दी समारोह के अवसर पर जिला उप प्रतिनिधि सभा, नागौर का चुनाव सर्वसम्मति से निर्विरोध सम्पन्न हुआ।

चुनाव में श्री किसनाराम आर्य (बिल्लू) को प्रधान, श्री यशमुनि वानप्रस्थी (परबतसर) मंत्री व श्री राजेन्द्र पडिहार (कुचेरा) को कोषाध्यक्ष निर्वाचित किया गया।

- किसनाराम आर्य (बिल्लू), प्रधान

पुलिस विभाग में हुये वेदोपदेश व भजन

विदेहराज जनक की पुत्री महारानी सीता जी का वास्तविक जन्म स्थान नेपाल में है। यह ऐतिहासिक क्षेत्र बिहार प्रान्त (भारत) की सीमा से लगा होने के कारण समस्त अंचल मिथिला ही कहलाता है। यहाँ मैथिली भाषा बोली जाती है। महर्षि दयानन्द अपने बिहार प्रवास में इस क्षेत्र में भी पदार्पण किये थे। अतः यहाँ पर आर्यसमाज का उच्च स्तरीय प्रचार रहा है, पर अब सामाजिक विसंगतियों के चलते उसमें काफी कमी आई है। हजारो लोग मांसाहार, बलिप्रथा आदि में फंसे हुए हैं। प्रति वर्ष द्यअत्रत्य आर्य जन प्रचार कार्य करवाते ही है पर इस वर्ष विशेष रूप से होशंगाबाद के आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी व मेरठ के पंडित अजय आर्य जी के उपदेश ४-५ स्थानों पर करवाए गए। १६ मई से २६ मई २०१७ तक क्रमशः प्रचार कार्यक्रम ग्राम भच्छी, बहेड़ी (दरभंगा) व रैमा (साहरघाट) मधुबनी में रखा गया। पुलिस विभाग की अनुमंडल अधिकारी डीएसपी सुश्री निर्मला जी मुख्य अतिथि के रूप में भी सम्मिलित हुई। आचार्य श्री पुरुषार्थी जी से चर्चा के उपरान्त उन्होंने अपने अनुमंडल कार्यालय के समक्ष उद्यान में पुलिस अधिकारियों में नैतिकता का विशेष भावो को जगाने के लिए एक कार्यक्रम सुबह ८ बजे रखा।

मनुष्य जन्म से नही कर्म से बड़ा होता है- स्वामी आर्यवेश
राजस्थान के प्रशिक्षक दे रहे बॉक्सिंग का प्रशिक्षण

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्,बेटी बचाओ अभियान व युवा निर्माण अभियान केसंयुक्त तत्वावधान में आयोजित, स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ,आश्रम टिटौली में चले रहे साप्ताहिक कन्याचरित्र निर्माण व योग शिविर मेंसार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जीमुख्य वक्ता के रूप में पधारे। स्वामी जी ने अपने उद्धबोधन में कहा कि कोईव्यक्ति जन्म से नही बल्कि अपने कर्म से बड़ा होता है। आज समाज में किसीव्यक्ति को जन्म के आधार पर छोटा बड़ा माना जाता है। उसका परिणाम है समाज काआपसी ताना बाना कमजोर होता जा रहा है।समाज को मजबूत व सशक्त बनाने के लिएकर्मों के आधार पर व्यक्ति का मूल्यांकन होना चाहिए। समाज में फैलेजातिवाद, साम्प्रदायिकता को एक झटके से खत्म करना पड़ेगा तभी एक आदर्श समाजकी स्थापना होगी। इस अवसर पर बहन प्रवेश आर्या ,बहन पूनम आर्या, सुनीता आर्या द्वारा अतिथियों कासत्यार्थ प्रकाश व स्वामी दयानंद का चित्र देकर सम्मान किया।

शिविर मेंराजस्थान के प्रसिद्ध शहर जालौर से बहक्सिंग के प्रशिक्षक श्री पुष्पेंद्रनेबहनों को स्वयं सुरक्षा के लिए बहक्सिंग का प्रशिक्षण दियावहींप्राची आर्या व सुमन आर्या द्वारा लाठी का प्रशिक्षण दिया गया।

- प्रवेश आर्या, संयोजक, जलभाष- ६४१६६३०६१६

घर घर यज्ञ व प्रति जन बृक्ष से होगा पर्यावरण स्वच्छ- विनोद बंसल
विश्व पर्यावरण दिवस पर हुआ आस्था कुञ्ज में पर्यावरण शुद्धि यज्ञ

नईदिल्ली। जून ५,२०१७.विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में एक बृहद पर्यावरण शुद्धि यज्ञ का आयोजन किया गया।यज्ञ के उपरान्त संवोधित करते हुए विहिप के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री विनोद बंसल ने कहा कि पर्यावरण की रक्षा भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र है। भारतीय दर्शन ही तो है जो समस्त विश्व को प्रकृति के भोग व दोहन से बचाकर समुचित उपयोग तथा उसकी संरक्षणवादी सोच की ओर ले जाता है। उन्होंने कहा कि हम प्रकृति प्रदत्त संसाधनों का उपयोग तो करें किन्तु उसके वर्धन की ओर भी सतत अग्रसर रहें. हमारी वैदिक परम्परा के अनुसार जब घर-घर में दैनिक यज्ञ तथा हर व्यक्ति का हर वर्ष बृक्ष होगा तो हमारे साथ पर्यावरण भी स्वस्थ होगा।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री रविदेव गुप्ता ने कहा कि विश्व को ओजोन के विनाशकारी दुष्परिणामों से बचाना है तो वेदों में दी गई दैनिक यज्ञ तथा प्रकृति प्रेम की पद्धति को पुनरू अपनाना होगा.

दक्षिणी दिल्ली के ईस्ट अहफ कैलाश स्थित आस्था कुञ्ज पार्क में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद तथा आर्य समाज मन्दिर संत नगर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस यज्ञ में वैदिक विदुषी श्रीमति विमलेश आर्या के ब्रह्मत्व में आज प्रातरू न सिर्फ पवित्र वेद मन्त्रो के माध्यम से आहुतियाँ दी गईं वल्कि दो दिन पूर्व ही कक्षा १० के परिणामों में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले छात्र अक्षित का सार्वजनिक रूप से सम्मान भी किया गया।

- विनोद बंसल राष्ट्रीय प्रवक्ता, विश्व हिन्दू परिषद, चलभाष- ९८१०९४९१०९

आर्यन अभिनन्दन समारोह

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस बार भी १७ सितम्बर-२०१७ को दिल्ली में आर्यों का अभिनन्दन किया जाएगा।

१. जो आर्य व्यक्तिगत रूप से प्रकाशन चला रहे हैं, पत्रिका निकाल रहे हैं, पुस्तक विक्रेता हैं।

२. आर्य समाज के प्रचार में एक ही परिवार से पिता-पुत्र, पति-पत्नी, भाई-बहन, भाई-भाई आदि वेद प्रचार में लगे हैं।

३. जो पुरोहित एक ही आर्य समाज में २५ वर्ष या उससे ज्यादा समय से बैठकर सेवा कर रहे हैं। हम उन सभी का अभिनन्दन करेंगे। सम्पूर्ण विवरण लिखकर भेजने की कृपा करें।

पता :-ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट
ए-४१, लाजपत नगर-द्वितीय, निकट- मैट्रो स्टेशन
नई दिल्ली- ११००२४
फोन : ०११-४५७९११५२, २९८४२५२७, +९१९५९९१०७२०७

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०५/१७ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०५/१७** के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्री यज्ञसेन चौहान, व्याख्याता; बिजयनगर (अजमेर), श्री रमेश आर्य; गुरदासपुर (पंजाब), श्री किशनाराम आर्य बीलू; नागौर (राज.), श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, दिल्ली, श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री धर्मवीर आसेरी; बीकानेर (राज.), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री गोवर्धन लाल झवर; सिहोर (म.प्र.), श्री संजय आर्य; सोनीपत (हरियाणा), श्रीमती परमजीत कौर, नई दिल्ली, श्री सुबोध गुप्ता; हरिद्वार (उत्तराखंड), श्री मोहन यादव; सिमडेगा (झारखंड), श्री सत्यनारायण तोलम्बिया; शाहपुरा (राज.) श्री विरेन्द्र कर; भुवनेश्वर। **सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।**

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ २० पर अवश्य पढ़ें।

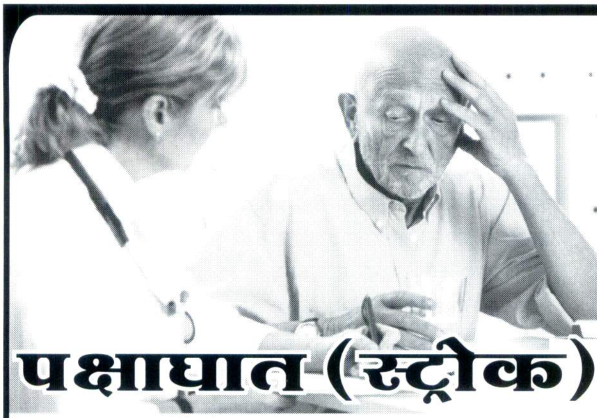

पक्षाघात (स्ट्रोक)

पक्षाघात तब लगता है जब अचानक मस्तिष्क के किसी हिस्से में रक्त आपूर्ति रुक जाती है या मस्तिष्क की कोई रक्त वाहिका फट जाती है और मस्तिष्क की कोशिकाओं के आस-पास की जगह में खून भर जाता है। जिस तरह किसी व्यक्ति के हृदय में जब रक्त आपूर्ति का अभाव हो जाता है तो कहा जाता है कि उसे दिल का दौरा पड़ गया है, उसी तरह जब मस्तिष्क में रक्त प्रवाह कम हो जाता है या मस्तिष्क में अचानक रक्तस्राव होने लगता है तो कहा जाता है कि आदमी को 'मस्तिष्क का दौरा' पड़ गया है।

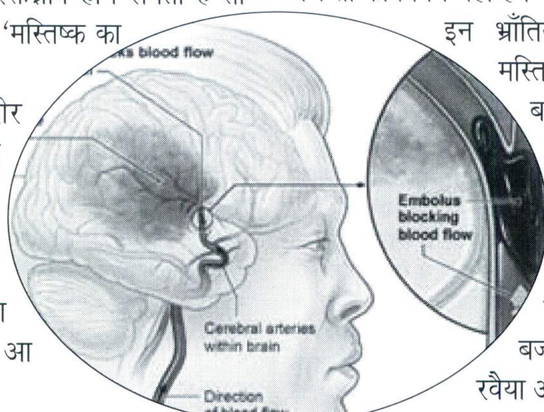

पक्षाघात में आमतौर पर शरीर के एक हिस्से को लकवा अर्धांगघात मार जाता है। सिर्फ चेहरे, या एक बांह या एक पैर या शरीर और चेहरे के पूरे एक पहलू में लकवा मार सकता है या दुर्बलता आ सकती है।

स्थानिकारक्तता (इस्चीमिया) मस्तिष्क में अपर्याप्त रक्त आपूर्ति की स्थिति में मस्तिष्क की कोशिकाओं के लिए ऑक्सीजन और पोषण का अभाव स्थानिकारक्तता (इस्चीमिया) कहा जाता है। स्थानिकारक्तता की वजह से अंततः व्यतिक्रम आ जाता है, यानि मस्तिष्क की कोशिकाएँ मर जाती हैं और अंततः क्षतिग्रस्त मस्तिष्क में तरल युक्त गुहिका (भग्न या इंफैक्ट) उनकी जगह ले लेती हैं। जिस व्यक्ति के मस्तिष्क के बायें गोलार्द्ध (हेमिस्फीयर) में पक्षाघात लगता है उसके दायें अंग मे लकवा मारता है या अर्धांग होता है और जिस व्यक्ति के मस्तिष्क के दायें हेमिस्फीयर में आघात लगता है उसका बायां अंग अर्धांग का शिकार होता है।

जब मस्तिष्क में रक्तप्रवाह बाधित होता है तो मस्तिष्क की कुछ कोशिकाएँ तुरन्त मर जाती हैं और शेष कोशिकाओं के मरने का खतरा पैदा हो जाता है। समय से दवाइयाँ देकर क्षतिग्रस्त कोशिकाओं को बचाया जा सकता है। शोधकर्त्ताओं ने पता लगा लिया है कि आघात के शुरू होने के तीन घंटे के भीतर खून के थक्कों को घोलने वाले एजेंट टिश्यू प्लाज्मिनोजेन एक्टिवेटर (टी-पीए) देकर इन कोशिकाओं में रक्त आपूर्ति बहाल की जा सकती है। शुरुआती हमले के बाद शुरू होने वाली क्षति की लहर को रोकने वाली बहुत-सी न्यूरोप्रोटेक्टिव दवाइयों पर परीक्षण चल रहे हैं।

मस्तिष्काघात को हमेशा से लाइलाज समझा जाता रहा है। इस नियतिवाद के साथ एक और धारणा जुड़ी थी कि मस्तिष्काघात सिर्फ उमरदराज लोगों को होता है इसलिए चिन्ता का विषय नहीं है।

इन भ्राँतियों का ही नतीजा है कि मस्तिष्काघात के औसत मरीज बारह घंटे के इंतजार के बाद आपात चिकित्सा कक्ष में पहुँचते हैं। स्वास्थ्य रक्षा सेवाओं के प्रदाता आपात चिकित्सकीय स्थिति मान कर पक्षाघात का इलाज करने के बजाय 'सतर्कतापूर्ण प्रतीक्षा' का रवैया अख्तियार करते हैं।

'मस्तिष्क का आघात' जैसे शब्द के इस्तेमाल के साथ पक्षाघात को एक निश्चयात्मक-विवरणात्मक नाम मिल गया है। पक्षाघात के शिकार व्यक्ति और चिकित्सकीय समुदाय दोनों की तरफ से आपात कार्रवाई मस्तिष्क के दौरे का उपयुक्त जवाब है। जनता को पक्षाघात को मस्तिष्क के दौरे के रूप में लेने और आपात चिकित्सा का सहारा लेने की शिक्षा देना अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि पक्षाघात के लक्षण दिखने शुरू होने के क्षण से आपात संपर्क के क्षण तक बीतने वाला हर पल चिकित्सकीय हस्तक्षेप की सीमित संभावना को कम करता जाता है। **क्रमशः ....**

स्रोत- नेशनल स्ट्रोक असोसिएशन
नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ न्यूरोलोजिकल डिस्आर्डर्स एण्ड स्ट्रोक

❏❏❏

जनसेवा सर्वोपरि

कथा सरित

बात उस समय की है जब बौद्धों के धर्म ग्रन्थ चीनी लिपियों पर ही उपलब्ध थे। तेत्सुजेन नामक एक जापानी व्यक्ति ने बौद्ध ग्रन्थों को अपने देश की लिपि में प्रकाशित कराने का निश्चय किया जिससे जापानी सरलता से उन्हें पढ़कर धार्मिक विचारों को जान सकें। इस प्रकाशन कार्य के लिए पर्याप्त धन की आवश्यकता थी। उसके अपने पास इतना धन नहीं था

कि वह उन्हें जापानी लिपि में प्रकाशित कर सके। इसलिए उसने सार्वजनिक रूप से जनता से चन्दे द्वारा धन एकत्रित किया। १० वर्षों के अथक प्रयास से इतनी राशि एकत्रित हो गई कि उससे ग्रन्थ प्रकाशित हो सकते थे किन्तु उसी समय यूजी नदी में बाढ़ आने से लाखों व्यक्ति तबाह हो गये। उसने अपनी समस्त राशि बाढ़ पीडितों की सहायता में खर्च कर दी।

कुछ दिनों बाद उसने पुनः दूने उत्साह से प्रकाशन के लिए धन जुटाने के लिए चन्दा किया फिर १० वर्षों के अन्दर उतनी राशि एकत्रित हो गई जिससे प्रकाशन हो सकता था। वह कार्य प्रारम्भ कराने को ही था कि है। जो की माहमारी का प्रकोप हो गया। लोग त्राही-त्राही करके मरने लगे। जनसंहार की भयावहता को समझते हुए तेत्सुजेन ने इसबार एकत्रित राशि भी रोग पीड़ितों पर खर्च कर दी।

इसके बाद वह पुनः अपनी भावना को साकार करने के लिए प्रयत्नशील हुआ और २० वर्ष तक कठोर श्रम के साथ उतनी राशि एकत्रित कर सका जिससे प्रकाशन संभव हो सका।

एक मित्र ने उससे पूछा- जो कार्य १० वर्ष में पूरा हो जाता इसके लिये तुमने ४० वर्ष क्यों लगाये? तेत्सुजेन का उत्तर था- धर्म ग्रन्थों का प्रकाशन तो कुछ वर्षों बाद भी हो गया। कोई विशेष हानि नहीं हुई किन्तु पीड़ित मानवता की सेवा करना सबसे पहला आवश्यक कर्म है, जिससे जीवन सार्थक होता है।

❑❑❑

साभार- हितोपदेशक

नवलखा महल में नवनिर्मित ''आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा'' एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

यहाँ हमें प्राचीन काल के बारे में जैसे रामायण, महाभारत व कृष्ण चरित के बारे में ज्ञान प्राप्त हुआ। हमें यह भी पता चला कि देश को आजाद कराने में भी कई लोगों ने अपनी जान लगा दी थी तथा दयानन्द सरस्वती जी के जीवनी के बारे में भी बहुत जानकारी मिली।

- दिव्या कच्छारा

महर्षि दयानन्द एक ऐसी महान् आत्मा थे जिनकी प्रशंसा शब्दों में बयां नहीं कर सकते। सभी महापुरुषों में केवल दयानन्द जी ने समग्र विश्व को पाखण्ड, अंधविश्वास से अलग करने का कार्य किया, जो आज तक किसी ने नहीं किया। मैं इनके सिद्धान्तों को जीवन में उतारूँगी और समाज में भी प्रचार-प्रसार करूँगी। **- भावना, कुसुम, शिवानी, यशवन्ती व निष्ठा, श्रीमद्दयानन्द कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, शिखापुरम्, चोटीपुरा ९४५७०४५८९१**

आज नवलखा महल में किसी कार्यक्रम के निमित्त आना हुआ। संयोग से चित्र प्रदर्शनी देखने का सुयोग बना। श्री अशोक जी आर्य ने सम्पूर्ण प्रदर्शनी के वाङ्मय को जिस कलेवर के साथ प्रस्तुत किया अन्तर्मन प्रसन्नता से ओतप्रोत हो गया। महर्षि दयानन्द क्या थे और उनके विचार एवं सिद्धान्त आज भी प्रासंगिक हैं, इस प्रदर्शनी से जीवन्त परिलक्षित होता है। **- श्री लोकेश द्विवेदी, उपमहापौर, नगरनिगम, उदयपुर**

उपयुक्त दण्ड व्यवस्था

वस्तुतः दण्ड विधान राजनीति का अभिन्न अंग है क्योंकि दण्ड व्यवस्था के न होने से राज्य व्यवस्था की कल्पना भी नहीं की जा सकती। अतः दण्ड विधान न्यायपूर्वक, मान्य विधि व दण्ड संहिता के आधार पर किया जाता है। दण्ड का न्यायपूर्वक संचालन जहाँ शान्ति व्यवस्था का जनक है, वहीं इसके दुरुपयोग से राज्य व्यवस्था व मानव समाज में अनेक अनियमितताओं और विसंगतियों का जन्म होता है। अतः महर्षि लिखते हैं- **'जो उस दण्ड का चलानेवाला सत्यवादी; विचार के करनेहारा; बुद्धिमान् धर्म, अर्थ और काम की सिद्धि करने में पण्डित राजा है उसी को उस दण्ड का चलानेहारा विद्वान् लोग कहते हैं।'** (सत्यार्थ प्रकाश)

स्वामी जी ने यह व्यवस्था दी है कि दण्ड व्यवस्था का निर्धारण, संचालन-ज्ञानी, आप्त, चरित्रवान को करना चाहिए 'क्योंकि जो आप्त पुरुषों के सहाय, विद्या, सुशिक्षा से रहित, विषयों में आसक्त मूढ़ है वह न्याय से दण्ड को चलाने में समर्थ कभी नहीं हो सकता...... और जो पवित्र आत्मा, सत्याचार और सत्पुरुषों का संगी, यथावत् नीति शास्त्र के अनुकूल चलने हारा, श्रेष्ठ पुरुषों के सहाय से युक्त बुद्धिमान है, वही न्याय रूपी दण्ड को चलाने में समर्थ होता है।'' (सत्यार्थ प्रकाश)

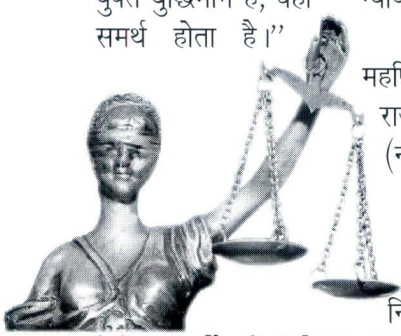

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित राज्य व्यवस्था में न्याय सभा (न्यायपालिका) की महत्वपूर्ण भूमिका है। न्याय सभा ही कानून व दण्ड सहिंता (Penal code) कर निर्धारण कर विधेय व निषिद्ध कर्मों की विवेचना करती है तथा विधि विरुद्ध आचरण या अपराध करने वाले को दण्ड देती है। डॉ. शान्ता मल्होत्रा 'Political thought of Swami Dayanand' नामक अपनी पुस्तक में इस सम्बन्ध में लिखती हैं- "Swami Dayanand recognizes impartial judiciary as bedrock of good government अर्थात् **महर्षि दयानन्द पक्षपात रहित न्याय व्यवस्था को श्रेष्ठ राज्य प्रशासन की बुनियाद मानते हैं।** वे आगे लिखती हैं- "Dispensation of Justice is recognized to be very important by Dayanand. He goes into details of fundamental causes from which the fueds arises and gives detailed procedure of code of Punishment." अर्थात् ''न्याय के संचालन को महर्षि दयानन्द बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं, वे अपराध के उत्पन्न होने के मूलभूत कारणों की थाह लेते हैं तथा दण्ड संहिता की विस्तृत प्रक्रिया का दिग्दर्शन कराते हैं।'' स्वामी जी ने **''त्रैविद्येभ्यस्त्रयी विद्यां दण्डनीतिं च शाश्वतीम्''** का उल्लेख कर राजा को सनातन न्याय का आश्रय लेकर न्याय करने का विधान किया है। वे अपने यजुर्वेद भाष्य (अध्याय ७-३६) में लिखते हैं- ''जैसे ईश्वर सनातन न्याय का आश्रय करके सब जीवों को सुख देता है, वैसे ही राजा को भी चाहिये कि प्रजा को न्याय व्यवस्था से सुख दे।'' वस्तुतः ईश्वर की सनातन व्यवस्था वेद है, जो सार्वभौम व सार्वकालिक व सनातन ज्ञान का पूर्ण भण्डार है; अतः न्याय सभा में वेदज्ञ, न्यायशास्त्र के ज्ञाता विद्वानों को नियुक्त करने का विधान किया गया है। सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी जी ने लिखा- ''इस सभा में चारों वेद, न्याय शास्त्र, निरुक्त, धर्मशास्त्र आदि के वेत्ता विद्वान् सभा-सद हों''।

मनुस्मृति में न्यायकार्य हेतु एक ब्राह्मण सभा भी संकेतित है-

यस्मिन्देशे निषीदन्ति विप्रा वेदविदस्त्रयः।
राज्ञश्चाधिकृतो विद्वान्ब्रह्मणस्तां सभां विदुः॥ -मनु. ८/११

अर्थात् जिस देश में वेदों के ज्ञाता तीन विद्वान् (न्यायाधीश) बैठते हैं और राजा द्वारा नियुक्त उस विषय का वेदवेत्ता विद्वान् बैठता है, उस सभा को 'ब्रह्मसभा' अर्थात् न्याय सभा कहते हैं। सत्यार्थ प्रकाश में दशावरा (दश विद्वानों की) व त्रयावरा (तीन विद्वानों की) सभाओं का उल्लेख भी है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि दण्डों का भागी कोई निरपराध न हो जाए इस बात का भी महर्षि जी ने उल्लेख किया है कि किसी को भी अधर्मयुक्त दण्ड न मिलने पाए-

अधर्मदण्डनं लोके यशोघ्नं कीर्तिनाशनम्।
अयशो महदाप्नोति नरकं चैव गच्छति॥ - मनु. ८/१२७-१२८

अर्थात् क्योंकि इस संसार में जो अधर्म से दण्ड करना है, वह पूर्ण प्रतिष्ठा, वर्तमान और भविष्यत् में होने वाली कीर्ति का नाश करने हारा है, और परजन्म में भी दुःखदायक होता है, इसलिए अधर्मयुक्त दण्ड किसी पर न करे।

❑❑❑

सम्पादक- अशोक आर्य

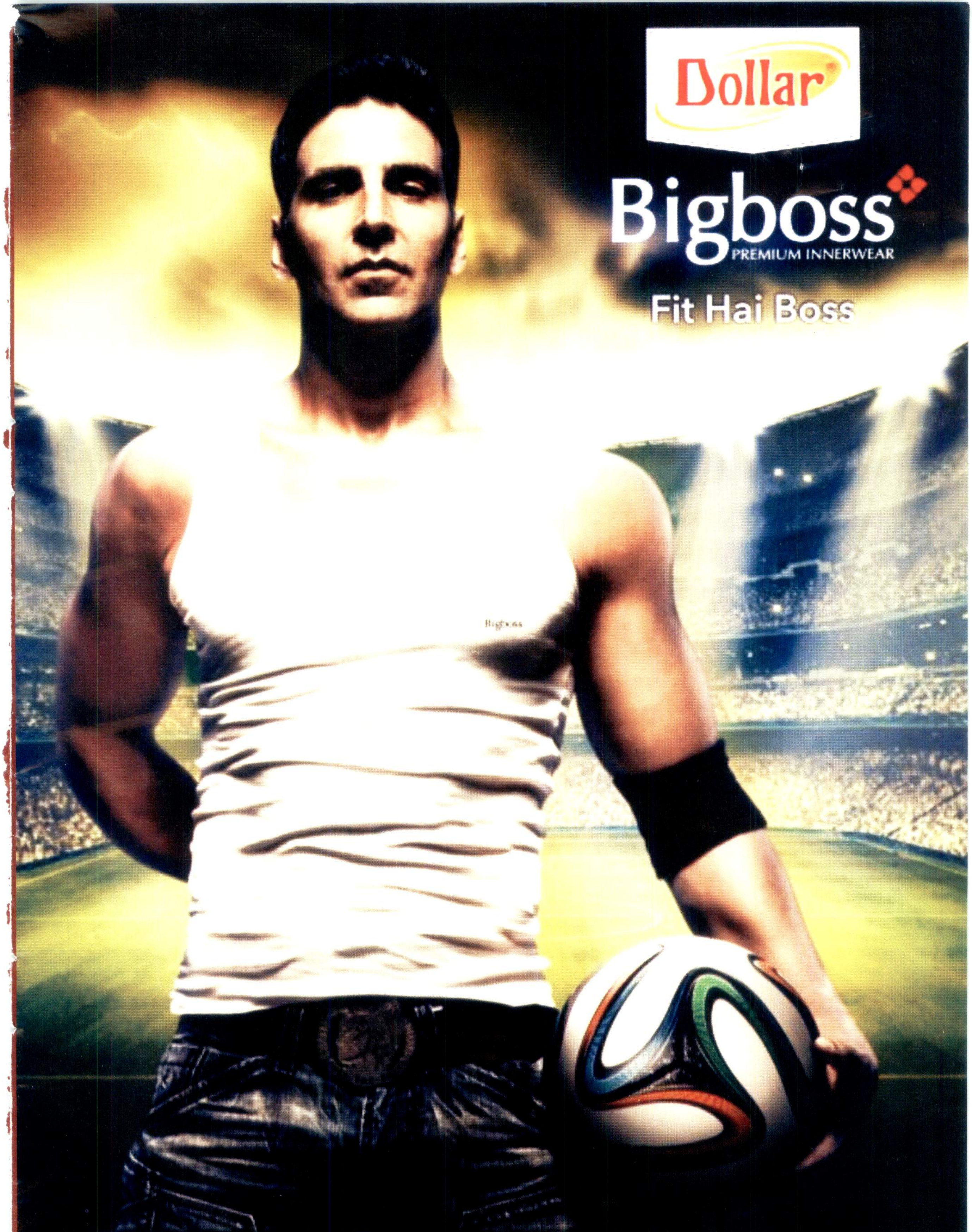
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 July-2017 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2016-2018

विद्या पढ़ने का स्थान एकान्त देश में होना चाहिये .... पाठशालाओं से एक योजन अर्थात् चार कोश दूर ग्राम वा नगर रहै ।

- सत्यार्थप्रकाश पृ. ३७-३८

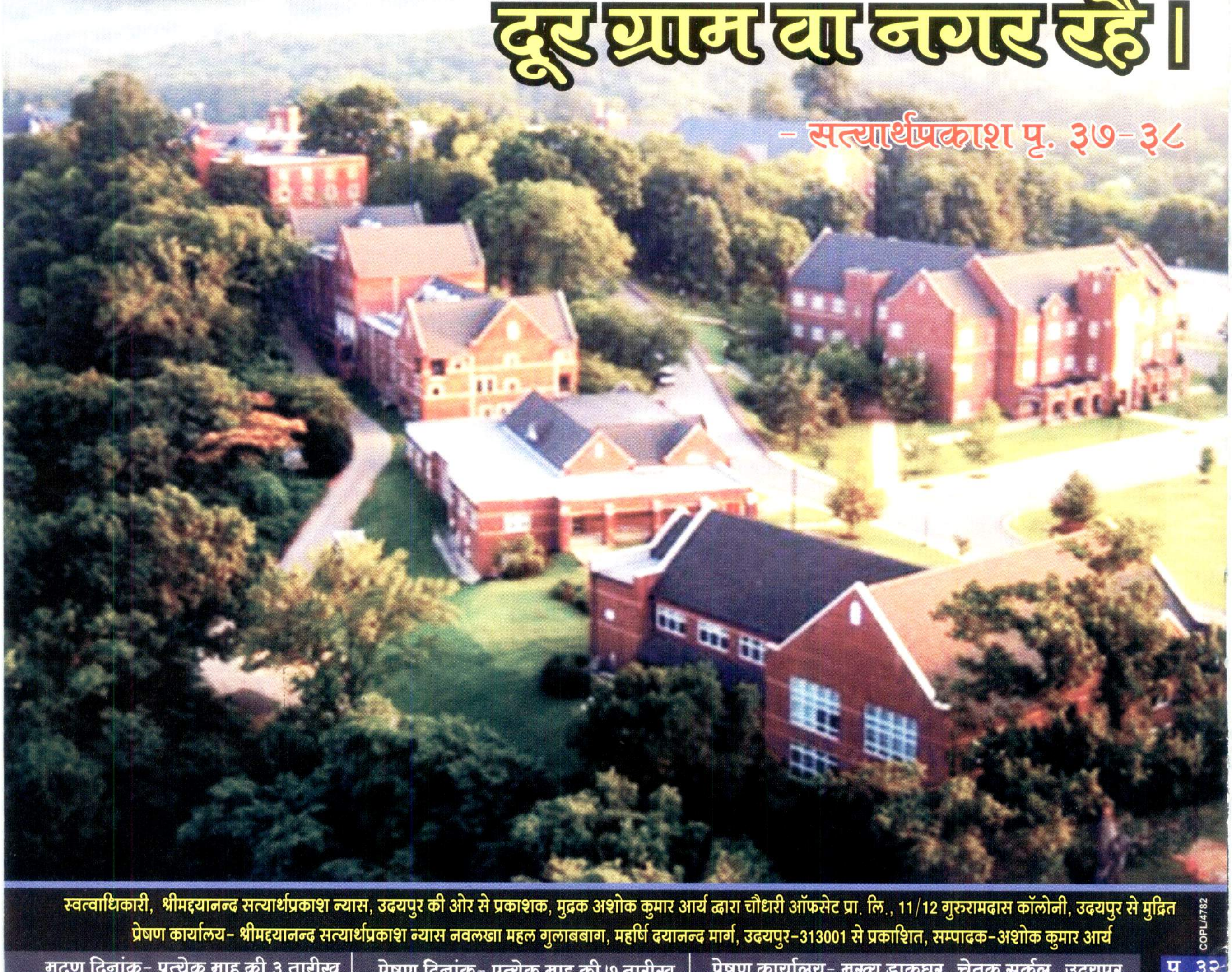

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
COPL/4782
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर